दीवाना

तेज साप्ताहिक मनोरंजन टॉनिक १ रुपया

23-7-79

शिक्षा—जो मीठे बोल नहीं बोलता उसका कोई मित्र नह

साप्ताहिक भविष्य

२८ जून से ४ जुलाई १९७९ तक
पं० कुलदीप शर्मा ज्योतिषी
सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं० हंसराज शर्मा

मेष : हालात में सुधार होता जावेगा तथा समय भी अच्छा व्यतीत होगा, जहां तक सम्बन्ध है कठिनाइयों एवं संघर्षों का ये भी कम होते जावेंगे, परिश्रम करने पर शुभफल मिलेंगे।

वृष : शारीरक कष्ट या व्यर्थ की उलझनों से परेशानी, यात्रा छोड़ दें, अन्य दिनों में पारिवारिक एवं व्यापारिक हालात भी ठीक चलेंगे, परन्तु अच्छा लाभ पाने के लिए कठोर परिश्रम करना पड़ेगा।

मिथुन : कामकाज की व्यस्तता में दिन व्यतीत होंगे, लाभ पहले से बढ़ेगा, संघर्ष भी काफी आयेगा तथा प्रयत्न करने पर ही काम सफल हो सकेंगे, किसी विशेष समस्या का समाधान हो जायेगा।

कर्क : यह सप्ताह विशेष अच्छा नहीं, घरेलू झंझटों के कारण कारोबारी जिन्दगी में भी परेशानियां पैदा होंगी, नातेदारों से वाद-विवाद, यात्रा करनी पड़ सकती है, सहयोगी अंगसंग रहेंगे।

सिंह : खर्चा काफी होगा, स्वभाव में गुस्सा, यात्रा में कष्ट, अन्य दिनों हालात प्रायः ठीक ही चलेंगे फिर भी समस्यायें बराबर बनती रहेंगी, यात्रा हो सकती है, किसी विशेष कार्य के प्रति दौड़धूप काफी करनी पड़ेगी।

कन्या : सप्ताह अच्छा है फिर भी साव-धानी आवश्यक है, प्रयत्न करने पर सफलता मिलती रहेगी, स्थायी काम-धन्धों से धन लाभ होता रहेगा, आर्थिक स्थिति मध्यम रहेगी।

तुला : भ्रमण व मनोरंजन आदि का प्रोग्राम तय होगा, नई योजनायें सामने आयेंगी, जमीन-जायदाद सम्बन्धी कामों में सफलता परन्तु कुछ अड़चनों का सामना भी करना पड़ सकता है।

वृश्चिक : सफलता के मार्ग में कुछ बाधायें ना आयेंगी परन्तु यह सप्ताह आपके लिए काफी लाभप्रद कहा जा सकता है, प्रयत्नों में सफलता मिलेगी और कोई विशेष काम भी पूरा हो जायेगा।

धनु : स्थायी काम-धन्धों में ही उन्नति होने लगेगी इसलिए नया काम आरम्भ करना ठीक नहीं, व्यापार पहले से बढ़ेगा और आर्थिक क्षेत्र में भी विकास होने लगेगा, शुभफलों में वृद्धि होगी।

मकर : रुकावटों एवं परेशानियों का सामना, धन की चिन्ता बन सकती है, अन्य दिनों में हालात अनुकूल चलेंगे और कामकाज की स्थिति में भी सुधार होता जावेगा, रुके हुए काम बन जायेंगे।

कुम्भ : कारोबार की दशा पहले से कुछ ठीक परन्तु घरेलू समस्यायें इन दिनों परे-शानी का कारण बनी रहेंगी, सरकारी कामों में सफलता या समय काफी खराब होगा, मन परेशान रहेगा।

मीन : पिछले दिनों की तुलना में यह सप्ताह अच्छा रहेगा, कारोबार में सुधार की कोई योजना बनेगी, लाभ भी पहले से अच्छा होने लगेगा, आय में वृद्धि परन्तु मिलेगी कुछ देरी से।

आपके पत्र

दीवाना का अंक १९ मिला, पढ़कर अत्यन्त खुशी हुई। पिलपिल-सिलबिल व मोटू-पतलू अच्छे रहे। आजकल दीवाना दिन दूनी व रात चौगुनी उन्नति कर रहा है। मगर आप दीवाना में थोड़ा हिस्सा चाचा चौधरी व मावु का भी लिखें। मुझे बहुत दुःख हो रहा है कि आप पुराने स्तम्भ बन्द कर रहे हैं तथा नए स्तम्भ चालू कर रहे हैं। मेरी शुभ-कामना है कि दीवाना का हर अंक इतना ही चटपटा होगा जितना अभी है।

अनिल दुर्गा—रायपुर

हमने कोई भी स्तम्भ स्थाई रूप से बन्द नहीं किया है बल्कि पाठकों के मनोरंजन के लिये समय-समय पर नये-नये स्तम्भ देते रहते हैं। —सं०

आज ही दीवाना का अंक १९ मिला। पढ़कर अत्यन्त खुशी हुई। इसका प्रथम पृष्ठ देखा, बड़ा मजा आया। काका के कारतूस, झोंपड़ी और महल कहानी, आपस की बातें, परोपकारी, सिलबिल-पिलपिल में 'भूत' और मोटू-पतलू बहुत पसन्द आया। फैन्टम, बन्द करो बकवास और सवाल यह है भी पसन्द आया। आजकल दीवाना बड़ी तरक्की कर रहा है, हमारी आशा है अगला अंक इससे भी अच्छा और रोचक निकलेगा।

सुरेश—गांधीधाम

जब से दीवाना से मुलाकात हो गई,
गम और उलझन से निजात हो गई।
दिल का खुशी के मारे सुनो हाल ये हुआ,
इक बिजली-सी गिरी और कयामत हो गई।
काका के कारतूस ने मदहोश यूं किया,
कब दिन ढल गया और कब रात हो गई।
मोटू-पतलू और सिलबिल से पिलपिल तक,
हर एक की अदा इक सौगात हो गई।
इनकी खूबीओं को कहां तक गिनायें हम,
जिन्दगी में कहकहों की बरसात हो गई।

श्री प्रकाश शर्मा—बम्बई

दीवाना का अंक नं० १९ मिला। मुखपृष्ठ पर चिल्ली को कार चलाते देख खुशी से मैंने चिल्ली से कहा कार में मुझे बिठाओ तो चिल्ली ने कहा तुम कार में न बैठो। बन्दर से डर जाओगे। मैं दीवाना का हर अंक खरीदता हूं लेकिन बीच में मेरे दीवाना के दो-तीन अंक छूट गये थे। अब वह बाजार में नहीं मिल रहे हैं। मैं आपके पास पैसा भेज दूं तो क्या आप वे अंक भेज देंगे?

विनोद राजपाल 'रतन'—फैजाबाद

पहले पत्र द्वारा हमारे सरकुलेशन विभाग से यह पता कर लीजिये कि वे अंक हमारे पास हैं भी या नहीं। —सं०

अंक १८ प्राप्त हुआ, मुखपृष्ठ देखकर बहुत हंसी आई। इस अंक में 'सवाल यह है?' 'क्या इनका भी कोई जवाब है?' मदहोश, जो न समझे अनाड़ी है, तूफान के बाद, एवं मुर्गा फिल्म्स का, गौतम होविंदा आदि बेहद पसन्द आये। दीवाना दिनों-दिन हंसी से भरपूर हो रहा है, लेकिन 'आपके पत्र' को और ज्यादा स्थान देना चाहिए एवं सबसे अच्छे पत्र को पुरस्कार दिया जाना चाहिये। 'जब मैं उल्लू बना' आशा है यह स्तम्भ सभी पाठकों के द्वारा सराहा जाएगा. क्या चुटकले लिखने पर (छपवाने पर) पुरस्कार (परिश्रमिक) दिया जाता है?

गौतम बोस 'अमित'—स्टेशन रोड, दरभंगा

चुटकुलों पर पारिश्रमिक नहीं दिया जाता —सं०

अंक : २३, २८ जून से ४ जुलाई १९७९ तक
वर्ष : १५

सम्पादकः विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिकाः मंजुल गुप्ता
उपसम्पादकः कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-ब, बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

चन्दे छमाही : २५ रु०
वार्षिक : ४८ रु० द्विवार्षिक : ९५ रु०

मुख्य पृष्ठ पर

इस जिस्म के टुकड़े हजार हुये
कोई इधर गिरा कोई उधर गिरा
बड़ी मुश्किल से जोड़ा सबको
कभी धड़कन शुरू तो कभी सिर फिरा
क्या करूं जब बन ही गया मैं
सब लोग कहें मुझे दीवाना।

हरी राजस्थानी, बम्बई-१६

प्र० : गाँव का आदमी पशुओं को चराता है, तो शहर का ?

उ० : मंत्री और नेता को, प्रेम से चराता है,
पीता है, खाता है, फिल्मीगीत गाता है।

दिनेश कुमार त्यागी, शाहदरा, दिल्ली ३२

प्र० : काका जी, 'लवलैटर' लिखने की कला कैसे सीखी जाए ?

उ० : बुकसेलर को दीजिए, रुपए तीन सहर्ष,
काका-काकी के लिखे, पढ़िए 'लवलैटर्स'।

संजय कुमार मानधन्या, इन्दौर

प्र० : काका, हमको आपकी आदत लगी खराब,
चार पत्र डाले मगर, मिलता नहीं जबाब।

उ० : गलती खुद ही कर रहे, हमें दिखाते ताव,
प्रश्न नहीं कुछ भी लिखा, कैसे देंय जबाब।

मनजीत सिंह अरोड़ा, जनकपुरी, नई दिल्ली

प्र० : ऐसा उपाय बताइए कि हम बिना पढ़े ही पास हो जायें ?

उ० : ठोकर खाते फिर रहे, बी. ए. पास सुजान,
नेतागीरी सीखिए, प्राप्त होय धन-मान।

उमाकांत कृष्णराव, ढोमणे, हींगन घाट (वर्धा)

प्र० : राम राज्य में दूध था, कृष्ण राज में घी,
क्या है जनता राज में, कहिए काका जी।

उ० : पंडित खंडित हो रहे, मौज कर रहे भाँड़,
खाइ रहे गो-माँस की, कढ़ी दक्षिणी साँड़।

दीनबन्धु पाण्डेय, वाराणासी (उ. प्र.)

प्र० : आचार्य हजारी प्रसाद जी द्विवेदी हमको छोड़कर क्यों चले गए ?

उ० : कलियुग के यमराज को, हेरा-फेरी भाय,
जे. पी. को वापिस किया, इनको लिया बुलाय।

महेंद्र कुमार पाण्डेय, बड़ा बाजार कलकत्ता

प्र० : सिनेमा में कोई कोई दर्शक सामने की बजाय पीछे की ओर देखते हैं ?

उ० : फिल्म सिनेमाहाल में, आगे-आगे होय,
काम कला का तमाशा, पीछे देखें कोय।

रियाजुद्दीन. स्मिथगंज, मेरठ सिटी

प्र० : शादी कौन से मौसम में मजा देती है काका ?

उ० : मौसम खुद ही बदलते. होंय 'वधू-वर साथ',
सर्दी में गर्मी बढ़े, गर्मी में बरसात।

नामदेव स्टोर्स, इटारसी (म. प्र.)

प्र० : जब कोई वेश्या, किसी दुलहिन के घर आती हुई बारात देखती है, तो क्या सोचती है ?

उ० : यह गन्दा-धन्धा किया, क्यों मैंने स्वीकार,
दुलहिन बनकर चमकती, बिकती नहीं बजार।

कीर्ति कुमार गांधी, सदरबाजार-धमतरी

प्र० : पति स्वर्गवासी हो जाए तो पत्नी सिंदूर लगाना छोड़ देती है। पत्नी के मर जाने पर पति क्या छोड़ता है ?

उ० : जरा जरा सी बात पर, देती कान मरोड़,
पत्नी मरते पति हुआ निर्भय, भय को छोड़।

धन बाहदुर गुरूंग, कुड़ा घाट-गोरखपुर

प्र० : नाराज माता पिता को कैसे खुश करें ?

उ० : अकर्मण्यता छोड़ कर, मेहनत कर भरपूर,
पैसे उनको भेंट कर, नाराजी हो दूर।

सुधीर कश्यप, ज्योतिपुरा-हिसार

प्र० : खमदार जुल्फ देखकर, घायल हुए हैं हम,
मुंह से बजाएं सीटी, दिल में सरमाया गम ?

उ० : सीटी बजाना छोड़ दो, खुद पर करो रहम,
नागिन हैं काली जुल्फें, डसलें तो निकले दम।

नामदेव सोलंकी, वाराणसी

प्र० : हमारे नेताओं की आत्मा मरती क्यों जा रही है ?

उ० : लोभ-मोह में फंस गए, कहलाते जो संत।
मरने लगती आत्मा, आता है जब अंत॥

शिव्वन लाल खत्री, रायपुर (म० प्र०)

प्र० : मूंछों पर हाथ फेरने से ताव आता है, तो दिल पर हाथ फेरने से ?

उ० : हाथ फिरा कर मूंछ पर, फड़कन लागा जट्ट।
दिल पर फेरा हाथ तो, मूंछ मुड़ा दीं झट्ट॥

मुश्ताक अहमद, सिराथू (इलाहाबाद)

प्र० : पान खाने से मुंह लाल होता है तो सिगरेट से ?

उ० : पान खाय मुंह लाल हो, सिगरट करे कमाल।
छल्ले छोड़ो धुआं के, फुला फुलाकर गाल॥

विनोद कुमार वर्मा, जवाहर मार्ग-इन्दौर

प्र० : सारे कारतूस खत्म हो जाएंगे, तब क्या छोड़ोगे काका ?

उ० : कभी न होंगे खत्म यह, देखा हृदय टटोय।
जब तक जीएं तब तलक, धूम-धड़ाका होय॥

डा० रामसिया सिंह व्याख्याता, शहपुरा (मंडला)

प्र० : अब तो काकी इतनी बूढ़ी हो गई होंगी कि उनको काकी के बजाय दादी कहना पड़ेगा ?

उ० : काकी, काकी ही रहे, उसकी लम्बी म्याद।
सूखे जाय अंगूर तो, किशमिश का दे स्वाद॥

सांवलदास बैरागी, हैदराबाद (आन्ध्र)

प्र० : आंध्र में इस बार विनाशकारी तूफान क्यों आया ?

उ० : राजनारायण से हुई इसी विषय पर बात,
बोले—इस तूफान में, 'आर. एस. एस.' का हाथ।

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।	**काका के कारतूस** दीवाना साप्ताहिक ८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-११०००२

दीवाना टी. वी. पैरोडी
कृषि दर्दशन

सभी भाइयों को नमस्कार। आज के कृषि प्रदर्शन कार्यक्रम में पहले इस मौसम में पैदा होने वाली चीजें दिखाई जायेंगी फिर मनोरंजन में भजन और आखिर में समाज में फैल रही आज की बुराइयों पर एक बात चीत।

तो पहले इस मौसम में बोये जाने वाले बीजों पर कुछ जानकारी के लिए आज हमारे स्टूडियो में चौधरी तना छेदक सिंह आये हैं। आप भूसा इन्स्टीचूट में कृषि अन्वेषक अधिकारी हैं। यह मेरे दायीं ओर बैठे हैं। तो चौधरी साहब...

सबसे पहले मैं आपसे यह पूछना चाहूंगा कि आजकल मौसम गर्मी का है, बरसात भी आने वाली है। ऐसे मौसम में कौन-कौन से बीज बोये जा सकते हैं।
यह आपने बहुत अच्छा सवाल किया।
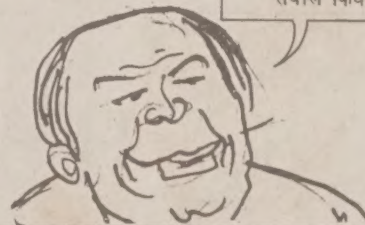
आपको पता ही है कि गर्मी और बरसातों में बाबू लोग प्रायः दफ्तरों से घर लेट आते हैं। एयरकंडीशड दफ्तरों में बैठे ताश खेलते रहते हैं। बीबी घर में जली-भुनी बैठी रहती है।
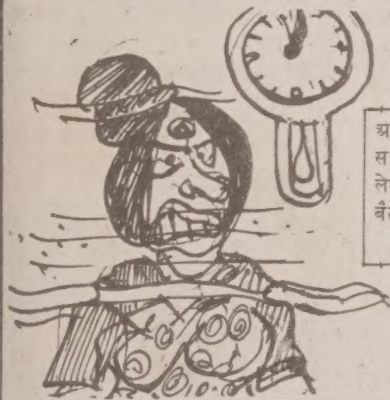
अब यह मौसम बाबू कालोनियों में सन्देह के बीज बोने का उपयुक्त मौसम है। बीबी के कान में उटपटांग बात डाल दीजिये, सन्देह का बीज फौरन जम जायेगा। पति देव का देर से आना खाद का काम करेगा।
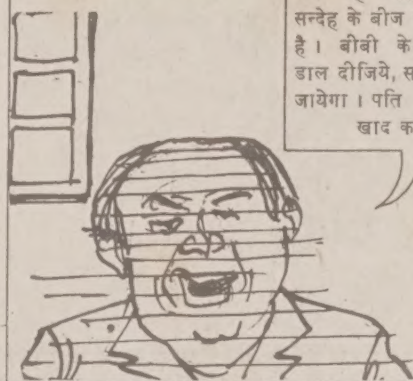
इसमें मेहनत भी बहुत कम करनी पड़ती है बस बाबू जी की बीबी को जरा सा हिन्ट भर दे दीजिये कि दफ्तर में टेलीफोन आपरेटर के साथ तुम्हारे उनको कल कनाट प्लेस में घूमते देखा था।
चौधरी साहब इसमें खाद वगैरह कौन सा डालें ?
इस फसल में यही मजे की बात है कि यह खाद नहीं मांगता। यूरिया या नाइटेट डालने की जरूरत नहीं है। पति के न आने से बीबी जल-भुनकर अपना खून जो जलाती रहती है वही खाद का काम कर देता है।

आर. एस. एसाइड—२ लिटर

राजनारायण की—१० किलो
बक बक

संजयथिया न—२ लिटर

देवराज अर्स के
पाइप का धुंआ—४० घन फीट

स्पेशल कौटेंस—२ नग
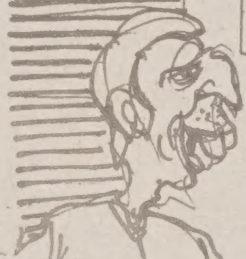
नशा बन्दी सनक—११ गैलन

भजन पेश करने वाले हैं

श्री फटा बांसानन्द

और

उनके साथी

हारमोनियम—टाइप राइटर सिंह

ढोलक—पापा राम

बांसुरी—तुतरी प्रसाद
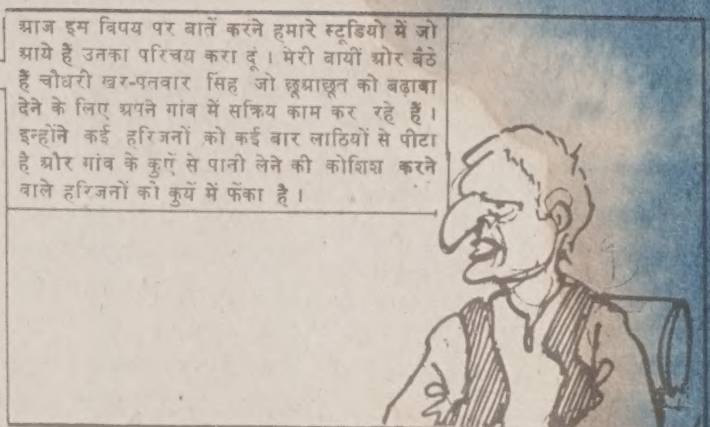
और मेरी दायीं ओर बैठे हैं सज्जन सिंह लालची! इन्होंने कम दहेज लाने वाली अपनी बहू को मिट्टी का तेल छिड़क जल मरने पर मजबूर किया और अपने छोटे लड़के की शादी में कम से कम एक लाख रुपये दहेज लेने का दृढ़ संकल्प किया है।
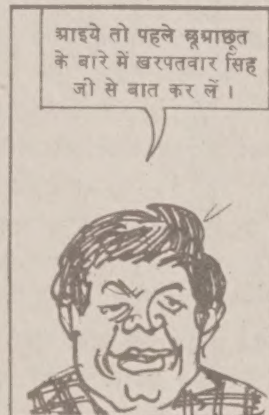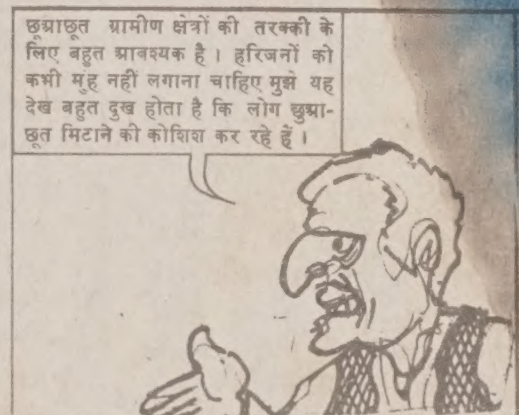
छूआछूत ग्रामीण क्षेत्रों की तरक्की के लिए बहुत आवश्यक है। हरिजनों को कभी मुंह नहीं लगाना चाहिए मुझे यह देख बहुत दुख होता है कि लोग छुआ-छूत मिटाने की कोशिश कर रहे हैं।
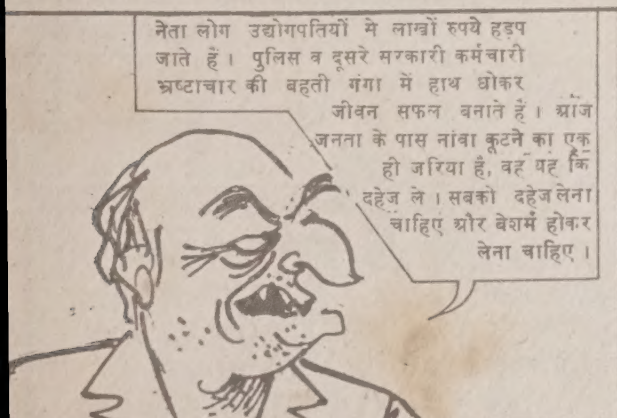
कृषि दर्दशन प्रोग्राम

प्रतिदिन

सोमवार,
मंगलवार,
बुधवार,
वीरवार,
शुक्रवार,
१६.३० बजे

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

कृष्णदेव पाण्डेय, अशोक कुमार पाण्डेय—खगोल : चाचा जी, 'आपके पत्र' स्तंभ में भाग लेने के लिए कौन-सा कूपन पोस्ट-कार्ड पर चिपकाना पड़ता है ?

उ० : सम्पादक दीवाना के पत्ते पर पत्र भेजिये और कोने पर लिख दीजिए, 'आपके पत्र'।

राधेलाल, परवाना—पलवल : आप दीवाना में पत्रों के उत्तर तो देते ही हैं, इसके अतिरिक्त और क्या करते हैं, यह बताइये ?

उ० : और क्या करते हैं, इसका हिसाब लगाना मुश्किल है, जैसे एक बार एक आदमी अपनी लड़की के रिश्ते के लिए लड़के के पिता के पास गया और पूछा, 'श्रीमानजी आपका लड़का क्या काम करता है ?' लड़के के पिता ने उत्तर दिया, 'जी, वह लकड़ी बेचने का काम करता है' लड़की के पिता ने पूछा, 'क्या वह टिम्बर मर्चेंट है ?' लड़के के पिता ने उत्तर दिया, 'टिम्बर मर्चेंट ही समझिए। वह गीली लकड़ी का व्यापार करता है।' इस पर लड़की का पिता बोला, क्या ठेका लेकर गीली लकड़ी के जंगल के जंगल काट कर बेचता है ?' लड़के के पिता ने उत्तर दिया, 'जी नहीं, वह घंटा घर पर दातुन बेचता है।'

संजीव कुमार, तुलस्यान—खगड़िया : यदि आप उपन्यासकार होते, तो किस प्रकार के उपन्यास लिखना पसन्द करते ?

उ० : पाठकों के रोंगटे खड़े कर देने वाले, या उनकी खाट खड़ी कर देने वाले।'

धर्मेन्द्र कुमार दुर्धा—रायपुर : क्या आप अपनी खोपड़ी का भूसा, डा० झटका और घसीटा राम की खोपड़ी में भरना स्वीकार करेंगे ? मुझे उन दोनों की हालत पर रहम आता है।

उ० : आप उसे चौदह साल से चर रहे हैं। आपका क्या विचार है कि वहां अब कुछ बचा होगा ?

देव कुमार—शीलांग (मेघालय) : चाचा जी, क्या आपकी पहले कोई गर्लफ्रेंड थी, या अब है ?

उ० : जी हाँ, पहले थी हमारी मां। फिल्म स्टार स्वर्गीय मोतीलाल का कहना था, हर आदमी की मां उसकी सबसे अच्छी गर्लफ्रेंड होती है।

विजय कुमार मेथानी—रायपुर : चाचाजी, आपके घर में कुल कितने सदस्य हैं ;

उ० : इस एक प्रश्न के कई उत्तर हैं : उत्तर नं० १—यदि आप राशन इन्सपेक्टर हैं तो हमारे घर के २२ सदस्य हैं। एक हम, हमारी श्रीमती जी, हमारी और उनकी दो माएँ, हमारे चार भाई, दो बहनें, और मुन्ना और एक मुन्नी। उ० नं० २—यदि आप हमारे घर में मेहमान बनकर आना चाहते हैं तो हमारे घर के सदस्य हैं, एक हम, एक हमारी पागल खाने से लौटी श्रीमति, एक मेहमानों के जूते तक चुरा लेने वाला उनका आवारा भाई और रात को परदेसियों का गला घोंटकर उन्हें जान से मार देने वाला

मालिक मकान का सरकटाभूत। उ० नं० ३—यदि आप चोर डाकू हैं : तो हमारे घर के सदस्य हैं, एक चाचा बातूनी, जो पहलवान चन्दगी राम के अखाड़े में धोबी पटखियां सीखते रहे हैं। एक हमारी श्रीमति जी, जो किसी की छाती पर चढ़ जायें तो समझो सड़क कूटने का इंजन चढ़ गया। चार पागल कुत्ते, जो शाकाहारी नहीं हैं और जिनके दांत किसी की जांघ में घुस जायें तो वहां से बिना कुछ लिए बाहर नहीं निकलते। एक हमारी मुन्नी, जो जूडो में पछाड़े को पानी नहीं मांगने देती और कैराटे में ईंट की बजाए पूरी दीवार तोड़ती है। एक हमारा मुन्ना जो छुरा फेंककर निशाना मारने में इतना माहिर हो गया है कि उछाले हुए १० पैसे के सिक्के को चीर कर बीच में से दो कर देता है।

अब आप जिस उत्तर से सम्बन्धित हों उसके अनुसार ही अपने को तैयार कर लें।

पवन कुमार योगला—जगराओ : यदि आपको शैतान मिल जाए तो आप उससे क्या मांगेंगे ?

उ० : उससे कुछ नहीं मांगेंगे। बल्कि उससे कहेंगे वह हमसे जो चाहे माँग ले, बस, वोट न मांगे। वह हम पिछले चुनाव में देकर आज तक पछता रहे हैं।

मु० नसीम, सामानी—गोरखपुर : सूरज दिन में निकलता है, गर्मी रात को होती है ऐसा क्यों ?

उ० : प्रश्न वह पूछा है, जिसका कोई मतलब नहीं। दिमाग हमारा खराब हो गया ऐसा क्यों ?

केवल प्रकाश दुआ—काशीपुर : आदमी खुशी से जहर कब नहीं पीता ?

उ० : जब उसे यह पता चल जाए कि जिस दुकान से वह जहर लाया है, वहां मिलावट नहीं होती।

नरेन्द्र कुमार सिन्धी—कपूरथला : क्या मृत्यु से सुन्दर भी कोई वस्तु है ?

उ० : महंगाई के इस युग में आपका जीवन जो मृत्यु की दूसरी शक्ल है। किसी शायर ने इसके लिए कहा है :

जिन्दगी तुझ पे ये एहसान किये जाते हैं,
जी नहीं चाहता मर मर के जिए जाते हैं।

● ग्राहक, 'वेटर कॉफी में मकड़ी है।'
वेटर, 'क्या करें साहब, मक्खियां खत्म हो गयी हैं।'

आपस की बातें
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

परोपकारी

कौन है भई मुझे किसने बुलाया ?

आप विमला देवी को जानते हैं न ?

कौन विमला देवी ? वो तो नहीं जो हमारे ब्लोक में रहती है।

जी हां वही, उनके साथ बड़ा बुरा हुआ। उनका मालिक मकान उन्हें घर से निकालने की धमकी दे रहा है।

क्यों भला, वो बेचारी तो बड़ी भली मानस है, घर बड़ी अच्छी तरह रखती है।
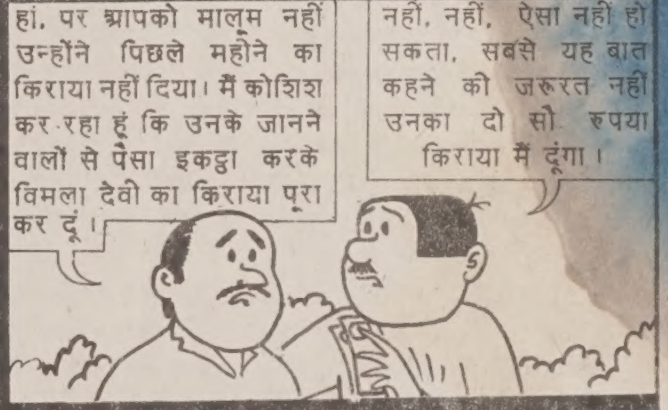
हां, पर आपको मालूम नहीं उन्होंने पिछले महीने का किराया नहीं दिया। मैं कोशिश कर रहा हूं कि उनके जानने वालों से पैसा इकट्ठा करके विमला देवी का किराया पूरा कर दूं।

नहीं, नहीं, ऐसा नहीं हो सकता, सबसे यह बात कहने की जरूरत नहीं उनका दो सौ रुपया किराया मैं दूंगा।

आप सचमुच परोपकारी हैं। अब विमला देवी को मकान छोड़ना नहीं पड़ेगा। धन्य हैं आप।

इसमें धन्य की क्या बात है, परोपकार तो आपका भी है जो विमला देवी के लिए इतना कर रहे हैं। वैसे आप हैं कौन ?

मैं विमला देवी का मकान मालिक हूं।

THE NATIVE

टोपनलाल की व्यथा कथा

व्यंग्य

डा० प्रेमचन्द गोस्वामी

मिस्टर टोपनलाल यह जानकर बड़े दुखी हैं कि बचपन में आप लोगों की तरह वे भी बच्चे ही थे। दूसरे बच्चों की तरह उन्हें भी खिलौनों, मिठाइयों और रेलगाड़ी से बेहद प्यार था। रेल का चलना, सीटी देना और रुकना उन्हें बहुत भाता था। गार्ड उसे हरी झंडी दिखाता और वह बेतहाशा चलने लगती। यह सब कुछ देखते हुए वे सोचा करते कि आगे चलकर वह भी रेल के इंजन-ड्राईवर बनेंगे।

किन्तु एक दिन उन्होंने देखा कि गार्ड द्वारा हरी लालटेन न दिखाए जाने पर रेल, प्लेटफार्म पर ही रुकी हुई खड़ी रही तो उन्होंने ड्राइवर बनने का इरादा त्याग दिया और गार्ड बनने की बात सोचने लगे। उन्हें पता चल गया था कि गार्ड के द्वारा हरी बत्ती दिखाए बिना रेल नहीं चल सकती।

कुछ बड़ा होने पर जब उन्होंने रेल में सफर करना आरम्भ किया तो बगैर टिकिट सफर करने वालों के साथ-साथ रेल के डिब्बों की खस्ता हालत देखी तो गार्ड बनने का विचार भी त्याग दिया।

किशोरावस्था को प्राप्त होने पर आप किशोरों के अभिभावकों की तरह टोपनलाल के अभिभावक भी बेहद बिजी होने के कारण उन्हें भावी कैरियर के बारे में कोई सलाह नहीं दे पाए थे। एक दिवस को जब वे किसी दोस्त की सालगिरह के मौके पर अपने पेट की ख्याल किए बिना मिठाइयां उड़ा रहे थे तो उन्हें अपनी महत्वाकांक्षा परवान चढ़ती नजर आई। पास खड़े उनके एक मित्र ने पूछा—'क्यों भई टोपनलाल मिठाई बड़ी बेरहमी से खा रहे हो।'

मित्र के व्यंग को न समझते हुए उन्होंने उत्तर दिया—'हां यार ! सोचता हूं मैं भी हलवाई बनकर मिठाइयों की दुकान खोल दूँ। बड़ा मजा रहेगा। आराम से गद्दी पर बैठे रहो और कड़ाई में से उतरती हुई गरम जलेबियां उड़ाओ।'

उनके मित्र ने जैसे उन्हें आकाश पर विचरण करते हुए एकदम से नीचे गिरा दिया। वे बोले—'क्या कहा ? तुम किस होश में हो भाई टोपनलाल ! हलवाई भी क्या कभी खुद मिठाई खाता है ? उसका काम तो मिठाई बनाने और बेचने का होता है।

टोपनलाल को जब हलवाई की स्थिति का पता चला तो उनका सारा जायका खराब हो गया। बोले—'भैया फिर हलवाई बनने से क्या फायदा ?'

अपने कैरियर के बारे में सोचते हुए एक बार वे सख्त बीमार हो गए। उन्हें डाक्टर के पास जाना पड़ा। डाक्टर ने उनसे जिस तरह बढ़ी हुई फीस वसूल की उसे जानकर उन्होंने डाक्टर का पेशा अपना लेना ठीक समझा। इस तरह वे कुछ ही दिनों में माला-माल हो जाने की स्कीम बनाने लगे। लेकिन एक दिन उसी डाक्टर के द्वारा गलत दवाई का इन्जेक्शन लगा देने पर एक मरीज को बेहोश होते देखा तो डाक्टरी पेशे से घबराकर वकील बनने का विचार किया। सोचा—अगर वकील बनकर उन्होंने कोई उल्टी सीधी पैरवी भी कर दी तब भी मुवक्किल ही जेल जायेगा, खुद उन्हें कोई खतरा नहीं। लेकिन, क्योंकि उन्हें काले कोट से चिढ़ थी। अत: वे वकील भी नहीं बन पाए। यदि उन्हें कोई काली चीज पसन्द थी तो वह थी—कालातिल जो किसी सुन्दरी के गोरे चेहरे पर खिलता है।

टोपनलाल जी को एक दिन अचानक पता चला कि वे जवान हो गए है। जवान होते ही उनके मन में प्रेम के ऐसे अंकुर फूटने लगे कि उन्हें हर कन्या उर्वशी नजर आने लगी। किन्तु प्रेम के फील्ड में भी दरअसल वे ठीक तरह से 'बैटिंग' नहीं कर पाए। क्योंकि उनका प्रेम एक साथ कई दिशाओं में चलता था। मैदान में खड़े रहकर प्रेम बाल की ओर टकटकी लगाए रहने के बावजूद वे कोई खूबसूरत 'कैच' नहीं ले सके। उनका दिल एक था और मुहब्बत की राहें अनेक। उनकी हालत पर तरस खाकर उर्दू के एक सायर ने कहा भी है :

इश्क की दो चार राहें हों तो दिल को ढूंढ़ लें।
क्या पता जालिम न जाने किस गली में खो खो गया।

और साहब, बाद के दिनों में जब मिस्टर टोपनलाल कुछ और बनने की सोच रहे थे तो परिवार वालों ने उनके साथ बड़ी ज्यादती की। उनके पिता अपनी दूसरी शादी तो कर नहीं सकते थे, अतः उन्होंने टोपनलाल की शादी कर दी। उन्हें लगा कि जब वे—और कुछ नहीं हो पा रहे हैं तो शादी शुदा हो जाने में क्या हर्ज है ? अतः उन्होंने पालतू कुत्ते की तरह अपने आपको विवाह नामक रस्म के हवाले कर दिया।

शादी के कुछ दिन बाद तक उनकी दिनचर्या काफी नियमित रही। पत्नी के चाय लाने पर बिस्तर से उठते। उसके साथ सैर-सपाटा करते। रात को देर तक उसे अपनी बहादुरी के किस्से सुनाया करते। उनकी पत्नी जब उनसे पूछती—'आप काम क्या करते हैं ? तो वे भीगी बिल्ली की तरह अपनी पूंछ अन्दर करके चुप हो जाते। बेकार रहने की वजह से घर और बाहर दोनों जगह उनकी साख गिरती जा रही थी।

अपनी साख जमाने के लिहाज से एक दिन फिल्मी मेगजीन पढ़ते हुए उन्होंने इरादा किया कि वे सम्पादक बनेंगे। इस बहाने कम से कम अपने दोस्तों की रचनायें छापकर उन्हें 'आब्लाइज' तो किया जा सकेगा। अखबार के नाम पर मिले कागज के 'कोटे' को ब्लेक में बेचा जा सकेगा और मेंगजीन के आजीवन ग्राहक बनाए जा सकेंगे।

लेकिन हायरी किस्मत ! इस बार टोपनलाल को उनके दोस्तों ने डरा दिया। बोले—'बच्चू अगर भूल से भी दुबारा इमरजेंसी लागू हो गई तो पूरे २१ महीनों तक जेल की हवा खानी पड़ेगी। अखबार का सम्पादक होना बड़ा रिस्की होता है।

वे यहाँ भी मैदान छोड़ भागे। उन्होंने नेता, अभिनेता पीर, खलीफा सब कुछ बनने की बात सोच ली किन्तु कहीं उनकी दाल नहीं गली। अन्त में उन्होंने क्लर्क बन कर सरकारी नौकरी करना तय किया। लेकिन अब तक बहुत देर हो चुकी थी। वे सरकारी नौकरी पाने की उम्र पार करके 'ओवर ऐज' हो चुके थे। उन्हें अपना भविष्य अन्धकारमय नजर आने लगा। अब उन्हें शायरी करने के अलावा कोई रास्ता नजर नहीं आ रहा था। उन्होंने कापी पेंसिल उठाई और लिखना शुरू कर दिया।●

बन्द करो बकवास

धीरे से जाना बगियन में...

वन्द करो वकवास. मैं धीरे से जाऊं या तेजी से. तुम प्रेस जरा जल्दी करो वर्ना वो इन्तजार करती-करती चली जाएगी।

इतना हुस्न पे हुजूर न गुरूर कीजिए

वन्द करो बकवास, और चिड़ियों को भगाओ।

जाता कहां है दीवाने, सब कुछ यहीं है सनम।
विजान पार्क

वन्द करो बकवास, सब कुछ होगा पर बाथरूम कहां है जरा यह बताओगे ?
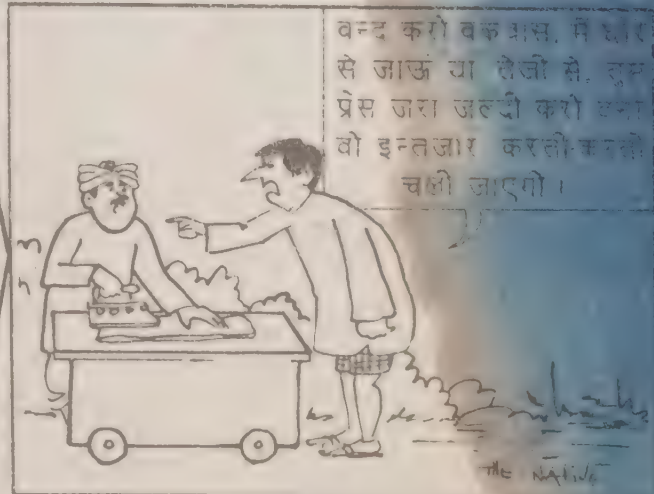
बुआ को बड़ी देर तक तो विश्वास नहीं आया···और जब उन्हें विश्वास हो गया तो उनकी आंखों से आंसू टपक पड़े—विनोद को जब यह बात मालूम हुई तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ···वह झट राजेश से मिलने चला गया।

'राजेश, जो मैंने सुना है···क्या वह सच है ?' विनोद ने राजेश से पूछा ।

'भई क्या सुना है ?'

'तुम राधा से शादी करने पर सहमत हो।'

'ओह···बिल्कुल सच है,' राजेश हंसकर बोला, 'इसमें घबराने की क्या बात है ।'

'तुम्हें सरिता ने मजबूर किया है ?'

'सरिता किसी को मजबूर नहीं कर संकती···सरिता के सामने तो स्वयं सभी मजबूर हो जाते हैं···लेकिन मुझे बहुत दुःख है कि तुमने ऐसी बात पूछी क्यों ? क्या तुम मुझे इस योग्य भी नहीं समझते कि मैं तुम्हारे बुरे समय पर भी काम आ सकूं।'

'लेकिन इतना बड़ा बलिदान···मैं यह उपकार कैसे चुकाऊंगा ?'

'विनोद यह न मैंने उपकार किया है न कोई बलिदान···हां, अपने दोस्त के थोड़ा काम आने का प्रयत्न किया है—और यह बहुत बड़ी बात नहीं—दूसरे···जिस बात को मैंने सहर्ष स्वीकार कर लिया वह मेरा ही जीवन-भाग बन गया···इसलिए किसी दूसरे पर उपकार का प्रश्न ही नहीं उठता ।'

विनोद अनायास राजेश से लिपट गया···राजेश हंसने लगा···फिर विनोद भी हंसने लगा।

'परन्तु···तुम्हारे माता-पिता···' विनोद ने थोड़ी देर बाद कहा ।

'उनकी ओर से इस बारे में मुझे पूरी स्वतन्त्रता है···उनका कहना है कि उन्हें बहू की आवश्यकता है···और बहू वही होगी—जिससे राजेश की शादी होगी। रह गई उनकी सहमति की बात···मेरी खुशी ही उनकी सहमति है···इसका मुझे विश्वास है···वह मेरी पत्नी को सहर्ष स्वीकार करेंगे···इसकी तुम चिन्ता न करो।

जब विनोद राजेश के यहां से घर लौटा तो उसके सिर से जैसे कई मन बोझ उतर गया था···वह बिल्कुल सन्तुष्ट था—

अगले ही सप्ताह राजेश और राधा की बहुत सादा और साधारण ढंग से शादी हो गई···न खाना हुआ, न बारात, न बाजे-गाजे और न दहेज का झंझट—हवन हुआ, फेरे हुए और दोनों पति-पत्नी के घनिष्ठ सम्बंध में बंध गए—यह है संयोग···राजेश ने केवल सवा रुपया कन्यादान में स्वीकार किया···।

पांच-चार दिन बाद राजेश राधा को अपने माता-पिता के पास छोड़ने ले गया···उन्हें स्टेशन पर विदा करने के लिए सभी आए सिवाय मासी, रघु और वीरेन्द्र के···।

राधा की शादी की समस्या हल हो जाने के बाद उनके सिर से एक बोझ तो उतर गया था···किन्तु फूलवती की शादी की जिम्मेदारी अभी सिर पर थी···वह समझते थे कि यह मामला भी आन और इज्जत का है···इसे वह अपना ऐसा ही कर्तव्य मानते थे जैसे कि कामनी की शादी को—फिर वह बुआ का दिल भी नहीं तोड़ना चाहते थे···।

काफी सोच-विचार के बाद फूलवती के पिता को तार देकर बुलाया गया···इसलिए कि अगले ही महीने में तो शादी थी···बुआ को तो इसकी सूचना पहले ही पत्र द्वारा दे दी गई थी किन्तु न तो उन्होंने पत्र का उत्तर दिया था और न आई थीं।

लड़की की शादी का मामला था···हजारों छोटे-मोटे प्रबंध होते हैं—तार मिलते ही फूफा आ गए···पिताजी ने उन्हें सारी स्थिति समझा दी और बोले—

'इस समय तो कहीं न कहीं से आपको ही प्रबन्ध करना पड़ेगा···मेरा हाथ बहुत तंग है···हां, इसे मैं अपने ऊपर ऋण समझूंगा और जब योग्य हूंगा तो चुका दूंगा ।'

'लेकिन भैया···मुसीबत तो इस बात की है कि आजकल आपसे अधिक मेरा हाथ तंग है—' फूलवती के पिता ने चिन्ता-भरे स्वर में कहा, 'अगर कहीं से आप द्वारा ऋण मिल जाए तो अगले महीने में सारा चुका दूंगा···कुछ मेरी पेंशन मिलेगी और कुछ फसल से बचेगा···आपने शादी की तारीख ही कुछ ऐसी निश्चित की है···वरना अगले महीने तो मेरे पास पैसा होता···फसल बहुत अच्छी हो रही है···सात-आठ हजार में बिक जायेगी ।

पिताजी किसी सोच में पड़ गए···कुछ देर बाद फूलवती के पिता ने कहा—

'हां यह हो सकता है···दूसरी बच्चियों के लिए जो दहेज मैंने बना रखा है वह फूलवती को दे दूंगा···फूलवती के लिए तो कुछ इसलिए नहीं किया था कि उसकी मां कहती थीं उसे आप लोगों ने अपनी बेटी बनाया है···और उसका सारा भार आप उठाएंगे।'

'निःसन्देह···उसे हम अपनी ही बेटी समझते हैं···और उसके लिए तुम जो कुछ दोगे वह हम पर ऋण ही होगा—चलो, दहेज से कुछ तो खर्चे में कमी होगी···रह गया खाने का सो वह बनिये से प्रबंध कर लूंगा···लेकिन सबसे बड़ी समस्या ऊपरी खर्चे की है···दो-ढाई हजार लग जाएंगे···कम-से कम···' पिताजी ने कुछ सोचते हुए उत्तर दिया।

'बस; अब तो आप ही लोगों को सोचना है, फूलवती के पिता ने निर्णयात्मक स्वर में कहा।

दूसरे दिन पिताजी बड़ा साहस बटोर-कर लाला दीनानाथ के पास गए—लाला ने पहले तो नाक-भौंह चढ़ाई···फिर कुछ ठंडे होकर कहा—

'मुझे देने से इन्कार नहीं···लेकिन केवल अंगूठे के निशानों पर ही कब तक भरोसा करूं···पहले ही सात हजार से ऊपर है···ऐसा ही है तो मकान गिरवी रख दो···दो हजार और दे दूंगा ।'

'मकान गिरवी रख दूं···?' पिताजी के दिल को धक्का-सा लगा ।

वह उसी समय उठकर घर चले आए···फूलवती के पिता वहां नहीं थे···पिताजी

ने मां को बताया···मकान को गिरवी रखने की खबर सुनकर मां बिदक गईं—बोली—

'नहीं···यह नहीं हो सकता···इतनी मुसीबतों से बना हुआ मकान बहा दूं···यह मुझसे सहन नहीं हो सकेगा।'

'फिर कोई रास्ता भी तो नहीं है विनोद की मां।' पिताजी ने चिन्ता भरे स्वर में कहा।

'क्या निश्चित हुआ भैया ?' अचानक फूलवती के पिता आ गए।

'क्या तय होता···लाला दीनानाथ दो हजार देने को तैयार हैं. पिताजी ने ठंडी सांस लेकर कहा।

'अरे वाह···फिर देर किस बात की है···ले लीजिए।' फूलवती के पिताजी खुश होकर बोले।

'लेकिन वह कहते हैं···मकान गिरवी रख दो···और मैं यह नहीं होने दूंगी।' मां ने निर्णयात्मक स्वर में कहा।

'एक महीने के लिए मकान गिरवी रख दीजिए···अगले महीने मैं छुड़ा लूंगा···' फूलवती के पिता ने कहा।

'तुम दो हजार दे दोगे···वहां आगे ही सात हजार का बोझ है···वह सब इसी में मिला लेगा।'

'अरे···तो चिन्ता काहेकी है···नौ हजार हो जायेंगे ना···अगले महीने के अन्त तक फसल बिकते ही आपको मिल जायेंगे···मेरा आपका अलग तो है नहीं ?'

'क्या कह रहे हो ?' पिताजी आश्चर्य से उछल कर बोले।

'ठीक ही तो कह रहा हूं···आखिर प्रियजन प्रियजनों के काम आते हैं। फूफा ने साहनुभूति-भरे स्वर में कहा।

भोले पिताजी और माँजी प्रसन्न हो गए।

दूसरे ही दिन मकान गिरवी रखकर दो हजार रुपया लाला ने दे दिया···हजार लड़ाइयों और मन्नतों के बाद बनवाया गया उषा मैनसन लाला के पास गिरवी रख दिया गया और फूलवती की शादी का कार्य आरम्भ हो गया। किराना मर्चेण्ट की दुकान से आटे को बोरियां आने लगीं···शामियानों, बरतनों और बावर्चियों का प्रबन्ध किया गया।

विनोद ने ऊषा मैनशन गिरवी रखते देखा तो कलेजा मसोस कर रह गया···लेकिन क्या करता···बेबस···सारा प्रबन्ध अपने ही हाथों से करने लगा···पिताजी ने फूलवती की शादी का सारा काम उसी को सौंप दिया था···विनोद गिरवी रखकर प्राप्त किए गए धन को लोगों के हाथों में जाता देखकर बस कुढ़ता ही रह गया···उसने सोचा···देखा जाए तो कागज के नोटों का मूल्य ही क्या है···किन्तु सामाजिक प्रगति तथा दुर्गती इन्हों पर निर्भर है···अगर पैसा है तो आपका सम्मान होता है और अगर पैसा नहीं तो यह बात न केवल आपको साधारण सुविधाओं से वंचित कर देती है बल्कि आपको अपमानित भी कर सकता है ···आपका स्तर सोसायटी से गिर जाता है—

उसी दिन शाम को फूलवती के पिताजी भी खुश-खुश गाँव रवाना हो गए···उनका प्रोग्राम अब पत्नी और बच्चों समेत आने का था।

एक बार फिर उषा मैनशन बड़ा अतिथि-गृह बन गया। मासी, मामा, भाभी रघु सभी शादी से एक हफ्ता पहले ही आ कर डट गए थे···अपने-अपने स्थान पर सभी खुश थे···पिताजी और मां वैसे ही घर में हर समय गहमागहमी देखना चाहते थे···यह बात अब उनकी प्रकृति में सम्मिलित हो गई थी···हाँ, इस व्यर्थ के हंगामे से अगर किसी को चिन्ता थी तो केवल विनोद को।

उसके होंठों पर मुस्कराहट का नाम तक भी नहीं था। वह जानता था कि मां और पिताजी की खुशियां अस्थाई हैं···और वह भी केवल बारात के जाने तक···बारात गई, ब्याह हुआ तो फिर कोई पूछने वाला भी नहीं होगा कि क्या चूल्हे पर हंडिया चढ़ी है या नहीं—यह सब खुशी और अच्छे समय के स्वार्थी साथी हैं···बुरे समय में कोई साथ देने वाला नहीं···फूलवती के पिता ने बड़ी चतुराई से शादी का बोझ पिताजी के सिर डालकर उन्हें ऋण में डुबो दिया है···उनका मकान महाजन के पास गिरवी रखवा कर वह चुपके से खिसक जाएंगे···वह एक पैसा नहीं लौटाएंगे।

तीसरा दिन था···।

आज बुआ फूलवती और बच्चों के साथ शादी के लिए आ रही थी···विनोद उन्हें लेने स्टेशन पर गया हुआ था···ट्रेन ग्यारह बजे आनी थी···विनोद ट्रेन की प्रतीक्षा में टहल रहा था···इस समय वह और सब कुछ भूल कर केवल फूलवती के बारे में सोच रहा था···अपनी बचपन की दोस्त फूलवती के बारे में···न जाने क्यों—इस लड़की के साथ उसने बचपन के बड़े मधुर क्षण बिताए थे···आज उसकी कल्पना में वही फूलवती किशोरी के रूप में नाच रही थी···वह दोनों एक बिस्तर पर साथ-साथ लेटे हुए हैं···फूलवती उसे कोई कहानी सुना रही है···फिर उसकी आंखों में फूलवती की वह लजीली मुस्कराहट उभर आई जब उसकी मां जी ने दोनों की शादी कर देने की बात की थी—वह फूलवती

शेष पृष्ठ ३५ पर

सिलोबल पिलपिल
प्रायश्चित

चूहे यह क्या गड़बड़ घोटाला है ? पब्लिक बोत तंग आ रही है, महंगाई बढ़ रही है । सरकारी लोग मनमानी कर रहे हैं, चक्कू छुरियां चल रही हैं ।
म्हारी मेहरबानी है ? वह कैसे भाई ?
यह सब थारी मेहरबानी है ।
थमने दिन रात काम करके जनता पार्टी को जिताया था कि नहीं । उन्हीं की गौरमींट तो कर रही है खाट खड़ी सबकी

पब्लिक को जो कठिनाई आ रही है उस सबका पाप थारे ऊपर ही लगेगा । थमने एडी चोटी का जोर न लगाया होता तो जनता पार्टी नहीं जीत सकती थी । सबसे बुरा तो यह हुआ कि इतना काम करने के बाद भी थमको छोटा मोटा मिनिस्टर तक भी नहीं बनाया गया, थारे मुह पर चांटा मारा गया ।
यह बात तो ठीक सै । हम तो कम से कम उप-प्रधान मत्री की कुर्सी की उम्मीद लगाये बैठे थे लेकिन इस दुनिया में सच्चे कार्यकर्ताओं को पूछता कौन है । नकली नेता आकर बैठ जाते हैं ।
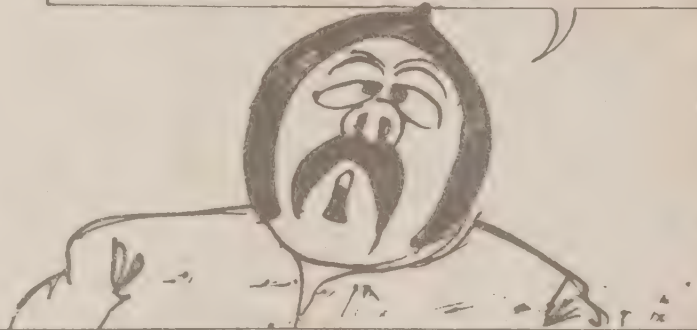
कुछ भी हो थारे सिर पाप तो लग ही गया है । इस पाप को थमको धोना पड़ेगा । प्रायश्चित करना होगा ।
हम लिरिल साबुन की चक्की लेकर हरिद्वार गंगा जी में डुबकी लगाने जाने को तैयार हैं ।

इक्कीस ब्राह्मणों को खाना भी खिलायेंगे । गरीबों में चिथड़ा कांड वाले धोती और कुर्ते भी बांटेंगे । आचार्य रजनीश के आश्रम मे कपड़े उतार कर ट्विस्ट और रॉक एन रोल भी करने को तैयार है ।
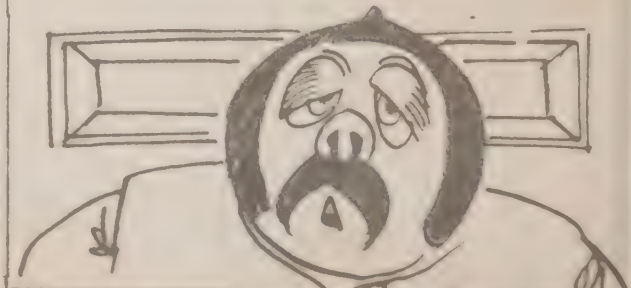
यह धार्मिक पाखंड नहीं चलेंगे । हमारे कारण पब्लिक को नुकसान हुआ है । हम पब्लिक से जाकर माफी मांगेंगे ।
हर देहलीज पर नाक रगड़ेंगे ।
जो भी उनके पास जाता है कुछ
नहीं जाता । कुछ
हम दिल्ली में एक विशाल रैली करेंगे, इतनी बड़ी विशाल रैली कि चौधरी चरणसिंह की किसान रैली भी उसके सामने फेल हो जाये । रैली में जनता की मांगों का एक चार्टर बनायेंगे और राष्ट्रपति तथा प्रधान मंत्री को पेश करेंगे । अगर हमारे चार्टर की मांगें न मानी गयी तो हम देश व्यापी आन्दोलन छेड़ देंगे ।
इस्कीम तो बड़ी जोरदार है ।
चरण सिंह की रैली में पांच लाख आदमी आये थे, थमारी रैली में कम से कम पांच करोड़ आदमी आने चाहियें । ऐसी भयानक रैली होनी चाहिये कि दिल्ली की जमीन थर्रा जाये । कारपोरेशन को सड़कें दोबारा बनवानी पड़ें । जिधर देखो आदमी ही आदमी नजर आयें । मुझे थम पर पूरा भरोसा है कि थम ऐसा कर सकते हो । सौ दो सौ चूहे तो मैं भी लेकर आऊंगा । एक ही प्राब्लम है म्हारे सामने, इतनी बड़ी रैली करने के लिये रुपया बोत लगेगा, करोड़ों रुपये चाहियें ।
पइशा तो लगेगा भाई ।

दिल्ली में महारानी बाग में दो हजार गज का पिलाट लेकर चालीस बेडरूम वाला पैलेस बनवायेंगे । बम्बई में ओबराय शेराटन होटल में पांच स्वीट हमेशा हमारे नाम बुक रहेंगे । दिल्ली अशोका होटल का प्रैजीडेंशल स्वीट हमारे लिये हमेशा बुक रहेगा । भई अपने गाम से रिस्तेदार मिलने वाले आयेंगे तो वह धर्मशाला में थोड़े ही ठहरेंगे । हमारी कोठी के हर गेट पर चार-चार इम्पोर्टेड गाडियां खड़ी रहेंगी । सारी कारों में वर्दी धारी शोफर बैठे रहेंगे । म्हारी शान देख कर लोग जल मरेंगे ।

अरे दिल्ली बम्बई ही क्या सारे हिल स्टेशनों पर हमारी अपनी कोठियां होंगी । गर्मियों में वहाँ जाकर ठहरेंगे ।
थम दोनों की गाड़ी पटरी से उतर गयी है । यह जो पाँच करोड़ रुपये हैं वह थारे बाप का पैसा थोड़े ही है । यह तो जनता की अमानत होगी जिससे थम रैली करोगे, जनता के अधिकारों की लड़ाई लड़ोगे । यह थारा प्राइवेट पैसा थोड़े ही है रैली का पैसा है ।
रैली ? कैसी रैली ? हम क्या अपने पैसे का इस तरह खून करेंगे । हमने जनता की लड़ाई लड़ने का ठेका ले रखा है ? हुह ।
कमीने गद्दार और पापी चूहे, तू जिस थाली में खाता है उसी में छेद करता है । म्हारे पास पाँच करोड़ रुपया देख कर तेरी छाती पर साँप लोटने लग गया । तू रैली का षडयंत्र रच कर म्हारी लुटिया डुबोने की ताक में है ! बता तू किसका जासूस है ?
रैली की योजना मैं नहीं थम बना रहे थे ।
उल्टे हमीं को दोष दे रहा है ? इसके साथ क्या सलूक होना चाहिये ?
जैसा एक जानवर दूसरे जानवर से करता है ।
MMEOOOOOOW!
GRRRRR
कारनामे अगले अंक में पढ़िये ।
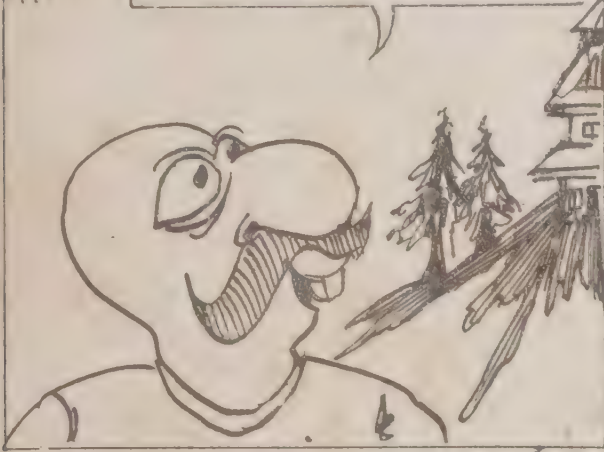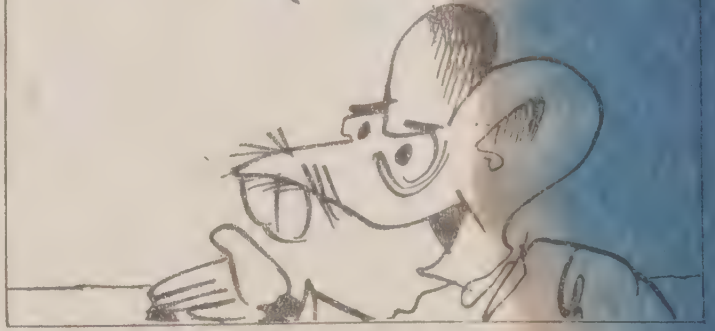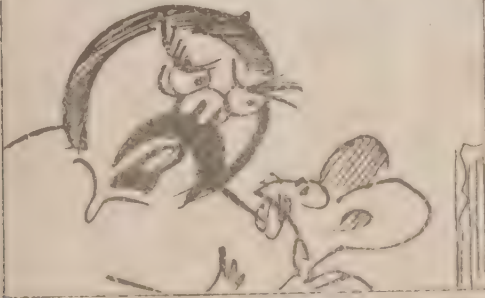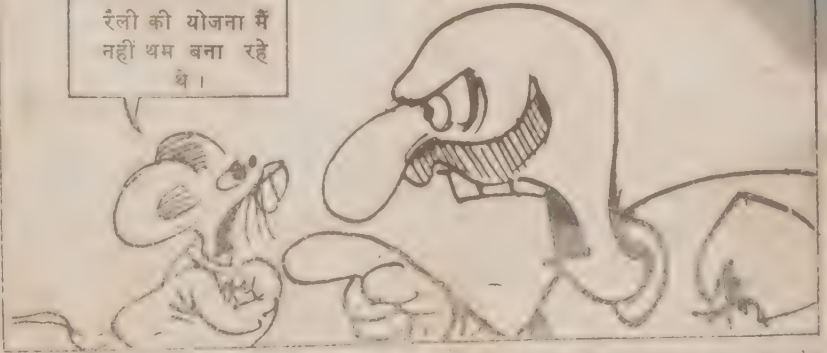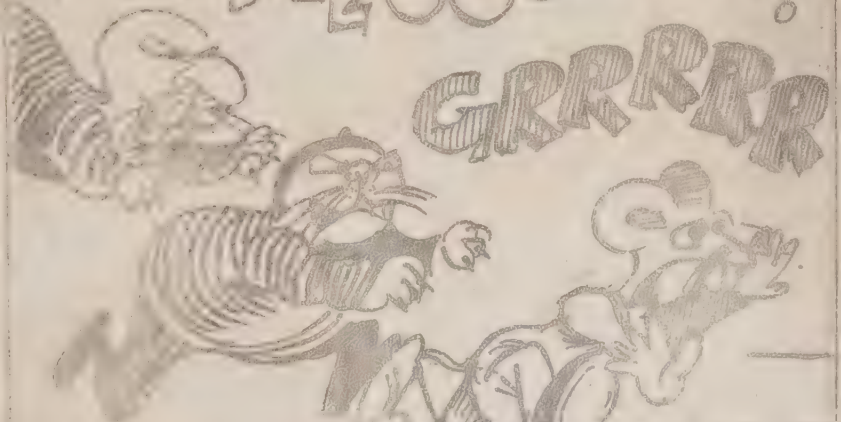
[illegible] में डाकुओं का एक [illegible] जासूसों का एजेंट [illegible] स्मगलिंग करने का [illegible] था। पुलिस से हुई [illegible] में अपने घायल साथी का इलाज [illegible] के लिए गिरोह ने मोटू को [illegible] समझ कर उसका अपहरण [illegible] था। और जब डाकू मोटू को [illegible] जान कर उसे फांसी देना [illegible], तो मोटू ने चालाकी से एक [illegible] को चित कर दिया था और दूसरे को [illegible] पर उल्टा लटका दिया था।

इससे पहले डाक्टर झटका की सैक्रेटरी शोभा की बहन सीमा का विवाह कैप्टन अशोक से हुआ था, वे हनीमून के लिये कश्मीर गये थे और वहीं गायब हो गये थे। कैप्टन अशोक के आफिस लाकर से एक खुफिया फाईल नं० ५५५ भी गायब थी। उसमें महत्वपूर्ण फौजी राज थे।

डाक्टर झटका की सैक्रेटरी शोभा और उसका साथी डिटैक्टिव विक्रम कैप्टन अशोक का पता लगाने के लिये श्रीनगर पहुंच कर उस गैस्ट हाउस में ठहरे हुए हैं जहां से अशोक और सीमा गायब हुए थे। वहां उनकी भेंट एक लड़की सोनू से हुई है। सोनू अपने को कैप्टन अशोक का पुराना मित्र बता रही है।

चेला राम और डा० झटका भी इस केस का पता लगाने के लिए श्रीनगर पहुंचे हुए हैं। चेला राम ने अपनी कलाई की घड़ी में लगे मिनी ट्रांसमीटर पर विदेशी एजेंटों का खुफिया संदेश सुना है। चेला राम ने उस संदेश का कोड मालूम कर लिया है, और खुफिया संदेश के सिगनल का पीछा करते-करते चेलाराम और डाक्टर झटका वहां पहुंच गये हैं जहां मोटू ने दो डाकुओं को काबू में किया है। इसके बाद होने वाले सच्चे और खतरनाक हंगामे आगे देखिए।
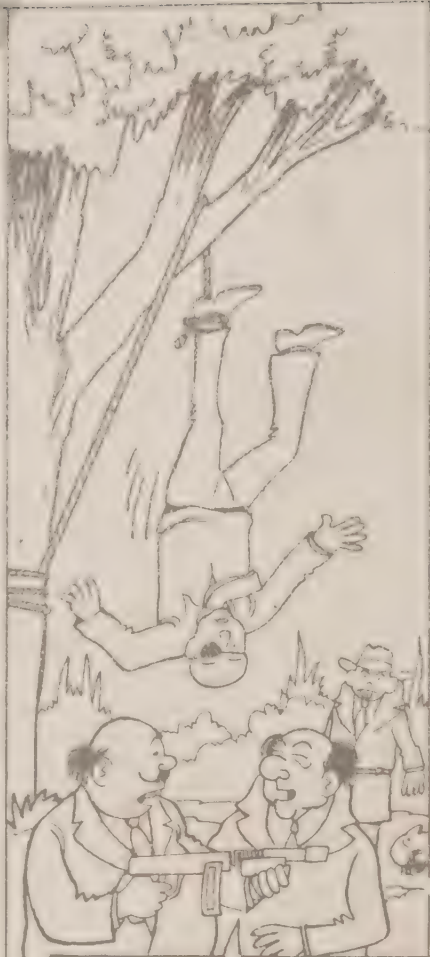
इनके और साथी भी हैं, मुझे डाक्टर समझ कर इन लोगों ने मुझे अपहरण किया था।

यही डाकू, विदेशी जासूस हैं।

हाँ, इनके अड्डे पर खुफिया ट्रांसमीटर हैं। जिससे यह अपने कोड में संदेश देते हैं।

है. क्या कैप्टन अशोक और सीमा भी इनकी कैद में हैं ?

पता नहीं, कैप्टन अशोक का नाम तो इनके मुह से कई बार सुना है।

चलो, इनका ठिकाना बताओ कहाँ है।

ठिकाना तो मुझे पता नहीं, यह दोनों मेरी आँखों पर पट्टी बांध मुझे फांसी देने के लिये यहाँ लाये थे।

एक तो लगता है मर गया दूसरे को नीचे उतार कर रस्सी मे बांध लो। इसी से इनके ठिकाने का पता लगेगा।
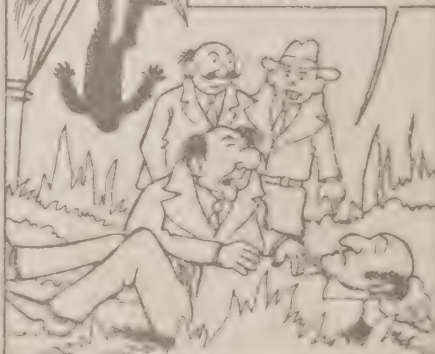
दूरबीन से बार्डर का दृश्य देखकर मोटू की आंखें फटी की फटी रह गईं ।

दूरबीन में बार्डर पार की फौजी गतिविधियां साफ दिखाई दे रही थीं ।

डाकू ने पहला ही हाथ मारा, तो डाक्टर झटका के मुह से चीख भी नहीं निकली। बन्दूक हाथ से छूट गई और उसे दिन में तारे नजर आ गये।
तेरी एक-एक हड्डी का चूरा बना दूंगा मैं।
आह
टक्कर मार कर मुझे लमलेट कर दिया अब मैं तेरा आमलेट बनाऊंगा मुर्गी के अण्डे।
पहलवानी में चन्दगी राम समझता है अपने आपको ?
मैं तेरा बोलो ही राम कर दूंगा।
नीचे पड़ा-पड़ा भी इतनी जोर से नोंच रहा है, सुना था भगवान गंजे को नाखून नहीं देता। यूं कहो गंजे को नेलकटर नहीं देता।
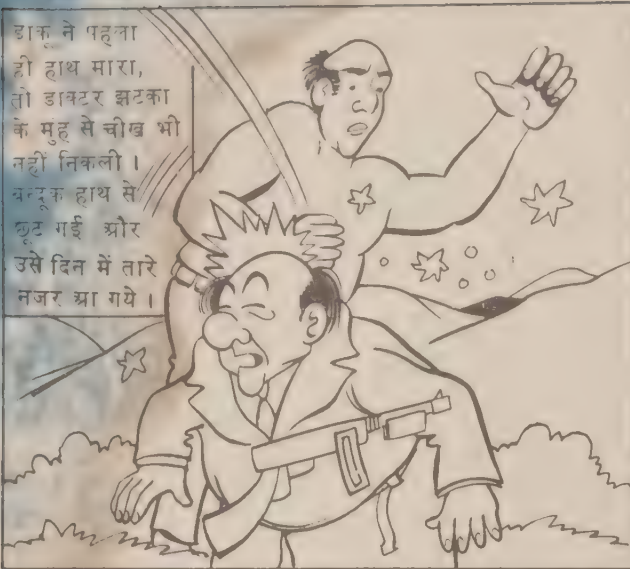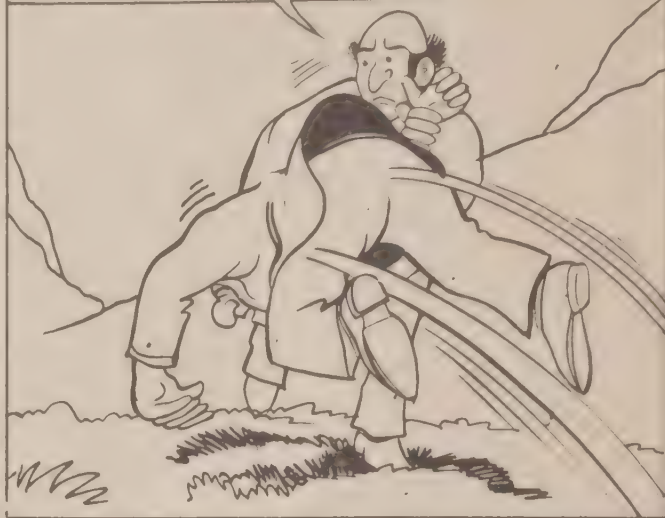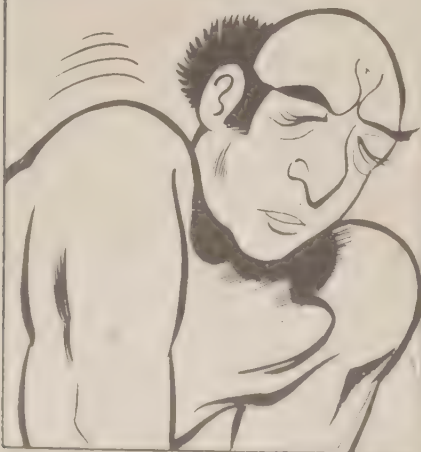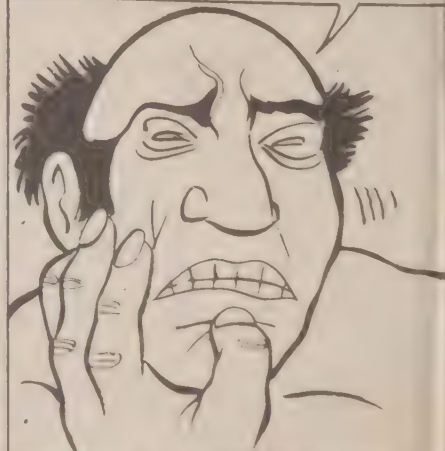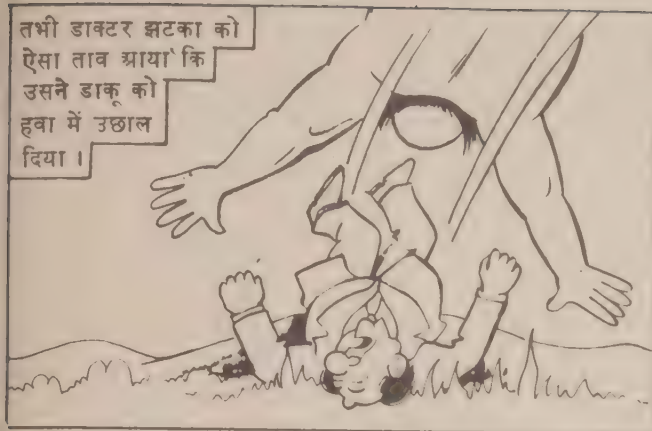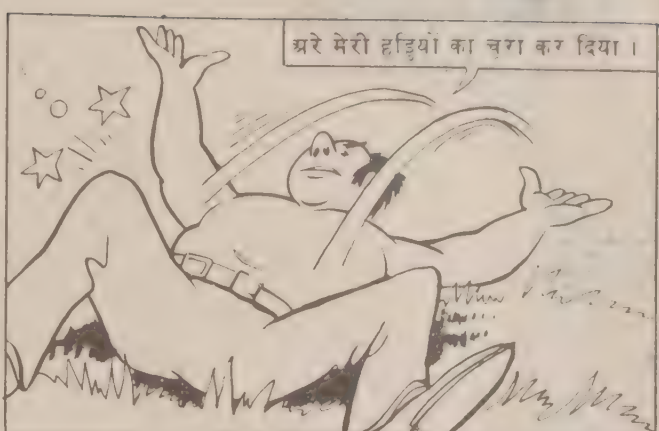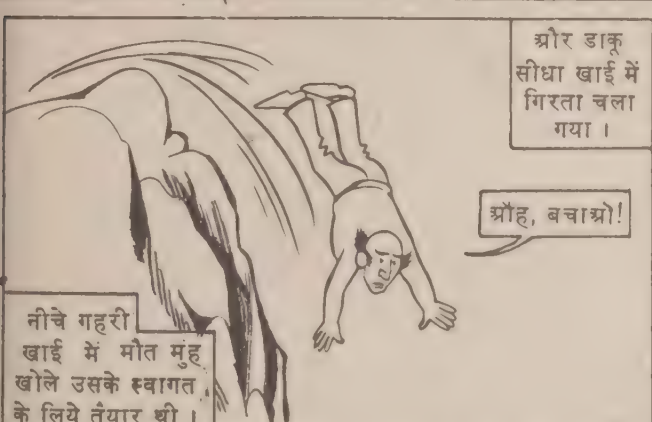
और डाकू सीधा खाई में गिरता चला गया ।

औह, बचाओ!

नीचे गहरी खाई में मौत मुंह खोले उसके स्वागत के लिये तैयार थी ।

तभी डाक्टर झटका के हाथ फिर बन्दूक आ गई ।

क्या मुसीबत है, यह कौन मार-कर मेरा सत्यानास कर रहा है मैं गोली से उड़ा दूंगा इस खरबूजे को ।
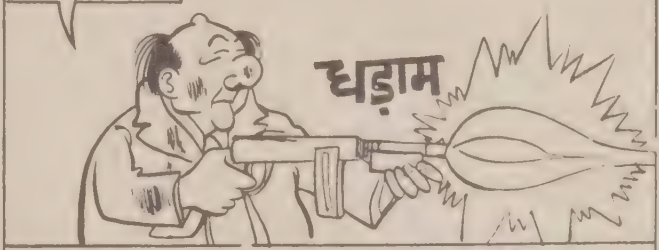
धड़ाम

और ताव-ताव में डाक्टर झटका ने गोली चला दी ।
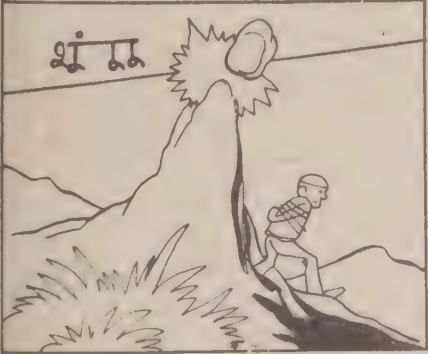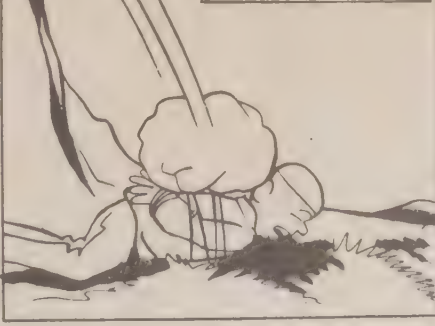
गोली की आवाज से मोटू और चेला राम चौंक गये ।

लगता है डाक्टर झटका ने बंदूक की गोली से डाकू मार दिया है ।

इसकी दवा की गोली भी तो बंदूक की गोली का ही काम करती है ।

तभी मोटू एक अजनबी आदमी से टकरा गया ।

मैं समझ गया तुम मेरी जान लेकर रहोगे ।

जान लेकर रहेंगे ? फिर किसी को फांसी देने के लिये ले जा रहे हैं क्या ? लगता है यह वही डाक्टर है जिसने इलाज को मना किया । पाकिस्तान से चला था तो मुझे यही बताया गया था और यह दोनों कोई नये एजेंट जान पड़ते हैं । इनके पास हमारी ही सप्लाई की हुई आटोमैटिक गन है । इनसे कोड में बात करके देखूं ?

उस आदमी के सवाल पर चेलाराम के दिमाग की सूई पूरी तेजी से घूम गई । कोड के शब्दों से उसने तुरन्त समझ लिया कि वह गैंग का आदमी है और पूछ रहा है, 'क्या तुम गैंग के आदमी हो ?'

और चेलाराम ने भी कोड का जवाब कोड में ही दे दिया ।

दां दफ वैंव ले नये आहफी दें ।

कह रहे हैं, 'हां हम गैंग के नये आदमी हैं ।' कोड का जवाब कोड में दिया है । चलो यह बात तो पक्की हुई कि यह अपने ही भाई बंद हैं ।

वह आदमी अपने अड्डे की ओर जा रहा था और यह तीनों उसके पीछे-पीछे थे और मोटू और डा० झटका एक ही बात सोच रहे थे।

चेलाराम ने जासूसों का जो कोड पकड़ा था। उसकी कुंजी के अनुसार अक्षरों को इस प्रकार पलटिये। जहां 'क' है वहां 'ल' लगाइये और जहां 'ल' है वहां 'क' लगाओ इसी प्रकार आपस में बदले जाने वाले अक्षर इस प्रकार हैं:—

फ : म   ब : प   श : घ   ट : च
ज : भ   ह : द   व : ग।

दूसरी ओर गैस्ट हाउस में अपने को अशोक का मित्र बताने वाली सोनू ने बातों ही बातों में शोभा और विक्रम का पूरा विश्वास प्राप्त कर लिया था।

तुम मुझे अपनी छोटी बहन समझो शोभा।

अशोक उसके फार्म पर ठहरता था। और उसकी बातों से लग रहा था कि वह कैप्टन अशोक के बारे में अवश्य ही कोई विशेष जानकारी दे सकेगी। यह सोचकर शोभा और विक्रम ने सोनू के साथ उसके फार्म पर जाना स्वीकार कर लिया।

गैस्ट हाउस से बाहर निकले तो दरवाजे पर एक टट्टू वाला तीन टट्टू लिये खड़ा था ।
टट्टू चाहिये मेम साब, ऊपर चढ़ाई के लिये ।
हां चाहिये ।

टट्टू पर बैठते समय शोभा ने टट्टू वाले का हाथ देखा तो वह चौंक पड़ी । उसके हाथ पर वही ड्रागॉन का निशान था ।

फंस गये चक्कर में । अब चलने से इन्कार भी किया तो यहां कौन सुनेगा ।

सोनूं के बताए रास्ते पर टट्टू वाला उल्टे सीधे पहाड़ी रास्तों पर आगे बढ़ा जा रहा था ।

फिर एक जगह जाकर सोनू ने टट्टू रुकवा दिये ।
यह लो अपने पैसे और तुम जाओ ।

और शोभा और विक्रम को साथ लेकर सोनू पैदल ही आगे बढ़ने लगी ।
अब हमें कुछ दूर पैदल चलना होगा ।

कुछ देर पैदल चलने के बाद
मेरा ख्याल है हम अपनी मंजिल पर पहुंचने वाले हैं ।
समझो पहुंच ही गये हो । आखरी मंजिल पर ।

वह सामने है मेरा फार्म हाउस ।

और आगे बढ़ने पर जब फार्म हाउस का दरवाजा खुला तो विक्रम और शोभा को यह समझने में जरा भी देर नहीं लगी कि वे कहां पहुंच गये हैं ।
भागने की कोशिश की तो गोलियों से भून दूंगा ।

तुमने अच्छी मुर्गियां पकड़ी हैं लिल्ली । सीमा न सही शोभा सही । अशोक न सही विक्रम सही ।
तुम सोनू नहीं लिल्ली हो ?
बको मत । में मुंह तोड़ दूंगी तुम्हारा ।
तुमने कहा नहीं था, तुम्हें पता है अशोक कहां है । पर तुम बताना नहीं चाहती ।
न बताने दो, जब अशोक को पता लगेगा कि सीमा की बहन हमारे शिकंजे में है तो वह सर के बल चलकर आएगा । और फाइल नं० ५५५ साथ लेकर आयेगा ।

में पता नहीं क्या हूं, यह तुम्हें सात जन्म पता नहीं लगेगा ।
बताओ कैप्टन अशोक कहां है
हमें नहीं मालूम । हम खुद उन्हें ढूंढ रहे हैं ।

तभी पीछे से दरवाजा खुला और आवाज आई:—
जरूर लेकर आएगा । तुम्हारी मौत का परवाना ।

किसी ने भी हिलने की कोशिश की, गोलियों से भून दूंगा ।
चारों ओर से तुम्हारे अड्डे को पुलिस ने घेरा हुआ है । तुममें से कोई भी बच कर नहीं भाग सकता । अपने आपको पुलिस के हवाले कर दो ।

और वास्तव में डाकुओं के अड्डे को चारों ओर से पुलिस ने घेरा हुआ था ।

मोटू पतलू की नई रंगीन फिल्म देखिये, ग्रागामी अंक में।

टैस्ट क्रिकेट की लम्बी चौड़ी पारियां ● विश्व रिकार्ड

इंगलड ९०३ रन सात विकेटों पर विरुद्ध ग्रास्ट्रेलिया ग्रोवल में सन् १९३८।

ग्रब तक खेले गये ८५० टैस्टों में ४२ बार पारियां ६०० रनों से ग्रधिक की संख्या पार कर गयी हैं।

इंगलैंड ने यह करिश्मा १० बार कर दिखाया, ग्रास्ट्रेलिया ने १५ बार, वेस्ट-इंडीज ने ११ बार पाकिस्तान ने ३ बार, द० ग्रफ्रीका ने २ बार व भारत ने एक बार।

क्रिकेट टैस्टों का पूरा ब्योरा

देश	सफलता का प्रतिशत	टेस्ट	जीते	[illegible]	बराबर	[illegible]	[illegible]
ग्रास्ट्रेलिया	५८.१३	[illegible]	[illegible]	१०१	१	[illegible]	[illegible]
इंगलैंड	५६.४७	[illegible]	[illegible]	२०१	—	[illegible]	[illegible]
वे० इंडीज	५०.७९	१८९	[illegible]	[illegible]	१	[illegible]	[illegible]
पाकिस्तान	४४.५०	१०१	[illegible]	५५	—	[illegible]	४६
द० ग्रफ्रीका	३८.६६	१७२	[illegible]	[illegible]	—	[illegible]	[illegible]
भारत	३८.५५	१६६	[illegible]	७०	—	[illegible]	[illegible]
न्यूजीलैंड	३०.१४	१३६	[illegible]	६२	—	[illegible]	६५
कुल टैस्ट मैच जो ग्रप्रैल १९७९ तक हो चुके हैं		८५०					

विभिन्न देशों के सर्वोच्च स्कोर

देश	रन	विरुद्ध	स्थान	वर्ष
इंगलैंड	९०३	ग्रास्ट्रे०	ग्रोवल	१९३८
(सात विकेट पर)				
वे०इंडीज	७९०	पाक	किंगस्टन	१९५७-५८
(तीन विकेटों पर)				
ग्रास्ट्रेलिया	७५८	वे०इं०	किंगस्टन	१९५४-५५
(ग्राठ विकेटों पर)				
पाक	६५७	वे० इं०	ब्रिजटाउन	१९५७-५८
(ग्राठ विकेटों पर)				
द० ग्रफ्रीका	६२२	ग्रास्ट्रे०	डरबन	१९६९-७०
(नौ विकेटों पर)				
भारत	६४४	वे०इं०	कानपुर	१९७८-७९
(सात विकेटों पर)				

(इसके ग्रतिरिक्त केवल तीन बार पारियां ७०० की संख्या पार कर गयी हैं। ८४९ रन इंगलड ने वेस्टइंडीज के विरुद्ध १९२९-३० में किंगस्टन में बनाये। ग्रास्ट्रेलिया ने १९३० में लार्डस में इंगलैंड के विरुद्ध ६ विकेटों पर ७२९ रन बनाये। फिर ग्रास्ट्रेलिया ने ही इंगलैंड के ही विरुद्ध ग्रोवल में १९३४ में ७०१ रन बनाये)

भारत की पारियों ने सात बार ५०० रनों की संख्या पार की है जिनका विवरण इस प्रकार :

रन	विरुद्ध	स्थान	वर्ष
६४२	सात विकेटों पर वे० इंडीज	कानपुर	१९७८-७९
५६६	आठ विकेटों पर ,, ,,	देहली	१९७८-७९
५३९	नौ विकेटों पर पाक	मद्रास	१९६०-६१
५३७	तीन विकेटों पर न्यूजीलैंड	मद्रास	१९५५-५६
५३१	सात विकेटों पर ,,	देहली	१९५५-५६
५२४	नौ विकेटों पर ,,	कानपुर	१९७६-७७
५१०	इंगलैंड	लीडस	१९६७

(भारत का ग्रास्ट्रेलिया के विरुद्ध उच्चतम स्कोर ४४५ रनों का है)

रणजी ट्राफी के विजेता रनर्स ग्रप की सूची

वर्ष	विजेता	रनर्स ग्रप
१९३४-३५	बम्बई	उ० इण्डिया
१९३५-३६	बम्बई	मद्रास
१९३६-३७	नागरवर	बंगाल
१९३७-३८	हैदराबाद	नागरवर
[illegible]-३९	बंगाल	द० पंजाब
[illegible]	[illegible]	[illegible]
१९४०-४१	महाराष्ट्र	मद्रास
१९४१-४२	बम्बई	मैसूर
१९४२-४३	बड़ौदा	हैदराबाद
१९४३-४४	प० इण्डिया	बंगाल
१९४४-४५	बम्बई	होल्कर
१९४५-४६	होल्कर	बड़ौदा
१९४६-४७	बड़ौदा	होल्कर
१९४७-४८	होल्कर	बम्बई
१९४८-४९	बम्बई	बड़ौदा
१९४९-५०	बड़ौदा	होल्कर
१९५०-५१	होल्कर	गुजरात
१९५१-५२	बम्बई	होल्कर
१९५२-५३	होल्कर	बंगाल
१९५३-५४	बम्बई	होल्कर
१९५४-५५	मद्रास	होल्कर
१९५५-५६	बम्बई	बंगाल
१९५६-५७	बम्बई	सर्विसिज
१९५७-५८	बड़ौदा	सर्विसिज
१९५८-५९	बम्बई	बंगाल
१९५९-६०	बम्बई	मैसूर
१९६०-६१	बम्बई	राजस्थान
१९६१-६२	बम्बई	राजस्थान
१९६२-६३	बम्बई	राजस्थान
१९६३-६४	बम्बई	राजस्थान
१९६४-६५	बम्बई	हैदराबाद
१९६५-६६	बम्बई	राजस्थान
१९६६-६७	बम्बई	राजस्थान
१९६७-६८	बम्बई	मद्रास
१९६८-६९	बम्बई	बंगाल
१९६९-७०	बम्बई	राजस्थान
१९७०-७१	बम्बई	महाराष्ट्र
१९७१-७२	बम्बई	बंगाल
१९७२-७३	बम्बई	तमिलनाडु
१९७३-७४	कर्नाटक	राजस्थान
१९७४-७५	बम्बई	कर्नाटक
१९७५-७६	बम्बई	बिहार
१९७६-७७	बम्बई	देहली
१९७७-७८	कर्नाटक	देहली
१९७८-७९	देहली	कर्नाटक

[illegible]डो कैराटे कैसे सीखें?

[illegible] चावल अथवा रेत के भरे [illegible] से [illegible] घुमाकर हाथ मजबूत करने [illegible] न हों, (जैसा कि अभ्यास वाले [illegible] में बताया गया है।) वे केवल हथेली की गद्दी तथा हथेली के इसी किनारे को [illegible] अभ्यास द्वारा ठोस बना लें तो उन्हें [illegible] भरे सन्दूक वाले अभ्यास को करने की [illegible] खास जरूरत नहीं है।

खासतौर से उन व्यक्तियों के लिए, [illegible] कामकाज उनकी हाथों की उंगलियों [illegible] द्वारा ही अधिकतर होता है। (जैसे टाइ-पिस्ट, चित्रकार, वादक और कसीदाकारी करने वाले व्यक्ति इत्यादि'।) दूसरे वे व्यक्ति भी रेत भरे संदूक वाले अभ्यास को न करें जो अपने हाथों की सुन्दरता को नष्ट नहीं करना चाहते; क्योंकि सन्दूक वाले अभ्यास को करने से हाथ व हथेली के चारों ओर की खाल सख्त पड़ जाती है और हाथ का सौंदर्य नष्ट हो जाता है।

'कैराटे चाप' का प्रयोग हम आत्मरक्षा के लिए विरोधी पर कई प्रकार से कर सकते हैं। यदि कोई आक्रमणकारी आपके पेट पर वार करने वाला हो तो आप 'कैराटे चाप' का इस्तेमाल उसकी कलाई या कोहनी के पास वाले हिस्से पर पूरी ताकत से करके शत्रु के हाथ को शिथिल कर सकते हैं।

इसी प्रकार 'कैराटे चाप' का प्रहार विरोधी के कान के नीचे वाले गर्दन के हिस्से पर, कंधे पर, गले के सामने वाले हिस्से पर जहां कंठ निकला रहता है, पसलियों पर, जबड़े पर भी किया जाता है। ये सभी हिस्से [illegible]रीर के कोमल भाग हैं [illegible] चोट करने से पीड़ा [illegible] होती है और शत्रु असहाय हो जाता है। शत्रु के घूंसे, [illegible] की ठोकर, [illegible] आदि को रोकने के लिए भी 'कैराटे [illegible]' का इस्तेमाल प्रभावशाली [illegible]

[illegible] चाप' का [illegible] प्रभावशाली [illegible] शत्रु का गर्दन [illegible] सकता [illegible] किए [illegible] कमजो[illegible] इस [illegible]

यहां तक कि इस प्रहार से शत्रु बेहोश तक हो जाता है। हंसली की हड्डी भी टूट सकती है।

हथेली की गद्दी का प्रयोग

हथेली की गद्दी का इस्तेमाल खासतौर से शत्रु की ठोड़ी पर किया जाता है अथवा पेट या छाती पर शत्रु द्वारा किए गए प्रहार को हथेली की गद्दी का ठीक इस्तेमाल करने के लिए चारों उंगलियों से चिपका हुआ रखते हैं। इसका प्रहार शत्रु की थोड़ी पर करने से शत्रु की गर्दन भी टूट सकती है। इस प्रहार का उपयोग अत्यन्त आवश्यकता पड़ने पर ही किया जाना चाहिए।

हथेली के प्रहार की दिशा नीचे से ऊपर की ओर होती है। इस प्रहार से कभी-कभी शत्रु के दांत तक टूट जाते हैं। जबड़ों का संचालन भी बन्द हो जाता है।

घूंसे का प्रहार नीचे की ओर

घूंसे के इस प्रहार के लिए मुट्ठी बांध लेते हैं। अंगूठे की तरफ का हिस्सा ऊपर की ओर तथा छोटी उंगली के किनारे वाला धारदार भाग ('कैराटे चाप' वाला भाग) नीचे की ओर होता है। इस घूसे का प्रहार ठीक उसी तरह किया जाता है, जिस तरह हम हथौड़े से चोट करते हैं। प्रहार करते समय मुट्ठी को सख्ती से भींच लेना चाहिए तथा चारों उंगलियों को हथेली की गद्दी से अच्छी तरह सटा लेना चाहिए। घूंसे के प्रहार को मजबूत करने के लिए हम अभ्यास वाले अध्याय में बता ही चुके हैं।

इस घूंसे का प्रहार शत्रु के कंधे पर सिर पर तथा जाघ पर किया जा सकता है। जाघ पर सीधा प्रहार तब किया जा सकता है जब शत्रु आपको घुटने की चोट मारना चाहता हो।

हथेली के इस घूंसे का प्रहार शत्रु की दाईं-बाईं पसलियों में अथवा कमर पर किया जाता है अथवा सीधा छाती पर भी वार किया जा सकता है। इस बगली घूंसे का इस्तेमाल हम आक्रमण तथा बचाव दोनों ही स्थितियों में कर सकते हैं। बगली घूंसे में हथेली के पीछे के भाग का भी इस्तेमाल किया जा सकता है बगली घूंसे का प्रयोग तभी किया जाता है, जब शत्रु आपके सामने बिल्कुल निकट हो अथवा अगल-बगल में आपकी प्रहार सीमा के निकट हो।

कोहनी का प्रयोग

कैराटे खेल में कोहनी के प्रहार का भी इस्तेमाल अपना विशेष महत्व रखता है; क्योंकि कोहनी से किया गया प्रहार बहुत ही कारगर होता है। कोहनी के प्रहार का इस्तेमाल भी तभी किया जाता है, जबकि आक्रमणकारी आपके बिल्कुल नजदीक हो। कोहनी को मजबूत करने के लिए अभ्यास वाले अध्याय में हम आपको विधि बता ही चुके हैं।

कोहनी के प्रहार को हम ऊपर-नीचे या दायें-बायें चारों दिशाओं में इस्तेमाल कर सकते हैं। यदि शत्रु आपके [illegible] पर घूंसे से बार कर रहा हो, तो फुर्ती से उसका घूसा रोककर तथा कलाई पकड़कर उसका हाथ अपनी ओर झटके से खींचिए। जैसे ही शत्रु का शरीर पास खिसक आये, आप अपनी कोहनी का प्रहार उसकी गर्दन पर सफलता पूर्वक कर सकते हैं। इस प्रहार से शत्रु एका-एक बौखला उठता है।

प्र० : प्रथम चल चित्र क्या था ? तथा इसके निर्माता कौन थे ?

उ० : चलचित्रों की अनोखी बात ये है कि चलचित्र सम्भव बनाने वाले इनमें बिल्कुल रुचि नहीं रखते थे । चलचित्र की सबसे पहली खोज श्री थोमस एडसिन द्वारा की गई थी जो मुख्यतः पशुओं की गति-विधियों का अध्ययन करना चाहते थे । सन् १८३९ में उन्होंने 'नाइटोस्कोप' नामक उपकरण भी एक अजूबे के रूप में ही आरम्भ किया था । शुरू में दृश्य मे गति दिखाने के लिए केवल हिलाने वाली वस्तुओं का ही चित्रण किया जाता था जैसे समुद्र की लहरें, दौड़ने वाले घोड़े, झूला झूलते बच्चे तथा स्टेशन पर आती हुई रेलगाड़ी इत्यादि । कहानी चित्रित करने वाली सबसे पहली फिल्म एडीसन लेबोरेटरी में सन् १९०३ में बनी थी । इस फिल्म का नाम था 'ग्रेट ट्रेन रोबरी' तथा इसके बनने पर देश-देश में तहलका मच गया था सबसे पहला चलचित्र प्रदर्शित करने वाला अमरीका का थियेटर सन् १९०५ में पिटसबर्ग पेनिनस्लेवेनिया में 'निकलोडिन' के नाम से खुला था । इस थियेटर को हर प्रकार की उपलब्ध आरामदेह वस्तुओं से सजाया गया था । इसके खुलने के जल्दी बाद ही सारे देश में और 'निकलोडिन' खुल गये थे । आरम्भिक प्रोड्यूमर तथा निर्देशक डी० डब्लू० ग्रिफिथ एक माने हुए कलाकार थे । ये ही पहले व्यक्ति थे जो दृश्य के बीच में कैमरे को इधर-उधर घुमा कर चित्रित करने में सफल हुए थे । और यहीं से आधुनिक फिल्मों की तकनीक का आरम्भ हो गया था । पास से चित्र लेना और कई नई बातें भी इन्होंने ही आरम्भ की थीं सन् १९१४ में इन्होंने बर्थ आफ दी नेशन नामक एक बहुत ही अच्छा चलचित्र बनाया था । ये चलचित्र सिविल वार के बारे में ७५०,००० डालर की लागत से बना था । आज भी इसे एक अत्यन्त दर्शनीय चलचित्र माना जाता है । सिसिल बी० डी० मिले तथा जैस लेस्के द्वारा स्कौमैन नामक चलचित्र बनाने के बाद हालीवुड संसार में चलचित्रों की राजधानी बन गया । इसके बाद दूसरी कम्पनियाँ भी हालीवुड में आकर चलचित्रों का निर्माण करने लगीं और आधुनिक चलचित्रों का बनना पूरी तौर से आरम्भ हो गया ।

प्र० : हमें ज्वर क्यों होता है ?

बलवन्त सिंह गुलाटी—बम्बई

उ० : तबियत थोड़ी भी खराब होने पर सबसे पहले हमारे डाक्टर अथवा माँ थर्मामीटर से हमारे शरीर का ताप नापते हैं जिससे पता चल जाता है कि ज्वर तो नहीं है । स्वस्थ शरीर का ताप ९८.६° फेरनहीट होता है परन्तु यदि शरीर किसी कारण अस्वस्थ हो जाता है तो शरीर का ताप बढ़ जाता है जिसे ज्वर कहते हैं । जबकि हर रोग से शरीर का ताप नहीं बढ़ता अपितु अधिकतर रोगों के कारण शरीर का ताप बढ़ जाता है । ज्वर भी शरीर के अस्वस्थ होने का लक्षण है ।

डाक्टर या नर्स दिन में कम से कम दो बार ज्वर नाप कर चार्ट पर लिख देते हैं । इस चार्ट की सहायता से ज्वर के घटने तथा बढ़ने के क्रम का अनुमान हो जाता है । इस क्रम को देखकर अधिकांश रोगों का डाक्टर अंदाजा लगा लेते हैं । क्योंकि भिन्न-भिन्न रोगों में ज्वर के उतार चढ़ाव के क्रम भिन्न-भिन्न होते हैं । जैसे निमोनिया होने पर ज्वर एक ढंग से बढ़ता घटता है तो फ्लू होने पर दूसरे क्रम से ज्वर उतरता चढ़ता है ।

अचरज की बात ये है कि अभी तक निश्चिन्त रूप से नहीं कहा जा सकता कि ज्वर क्या है, परन्तु ये अवश्य कहा जा सकता है कि ज्वर शरीर में रोग से लड़ने की क्षमता उत्पन्न करता है । ज्वर आने पर शरीर के अभिन्न अंगों से कार्य अधिक तेजी से करवाता है । ज्वर में शरीर अधिक हारमोन, ऐनजाइम तथा रक्त अणु उत्पन्न करता है । है । हारमोन तथा ऐनजाइम शरीर के लिए उपयोगी रसायन है इनकी सहायता से शरीर के अंग अधिक परिश्रम करते हैं साथ-साथ रक्त अणु रोग के कीटाणु नष्ट करते हैं । शरीर में रक्त तेजी से बढ़ता है, सांस तेज हो जाती है और इससे शरीर भीतर के विष तथा गंदगी से शीघ्र छुटकारा पाता है । फिर भी शरीर लम्बे समय तक या बार-बार के ज्वर को सहन नहीं कर पाता क्योंकि केवल चौबीस घंटों के ही ज्वर से शरीर में एकत्रित प्रोटीन नष्ट हो जाते हैं । प्रोटीन शरीर के [illegible] ज्वर द्वारा रोगों [illegible] महंगा पड़ता है ।

प्र० : क्या कोई [illegible] करके अपना बचा[illegible] करते हैं ?

उ० : जब कोई पशु [illegible] पशु पक्षी की नकल [illegible] जैसी बना लेते हैं तो इसे [illegible] इससे नकल करने वाले पशु [illegible] लाभ पहुंच सकता है । अधिक[illegible] से ये पशु पक्षी शत्रुओं से अपनी [illegible] हैं । उदाहरण के लिए यदि एक [illegible] के कीड़े को चिड़ियाँ खाना पसन्द नहीं क्योंकि उसका स्वाद उन्हें अच्छा नहीं [illegible] था उसमें कोई दुर्गन्ध आती है या उसमें एक होता है तो इस कीड़े के विशेष सुन्दर और आकर्षक रंग से वे इन्हें पहचानती हैं और दूसरी जाति के ऐसे रंगों के कीड़ों को देखकर भी वे खतरे का सिगनल समझकर उन्हें भी नहीं खातीं और रंग की नकल से इस जाति के ये कीड़े अपनी रक्षा करते हैं ।

इस प्रकार की नकल पर भक्षी भी अक्सर कर लेते हैं जिससे शिकारी को भी धोखा हो जाता है । ऐसे पर भक्षी अपनी ही शक्ल वाले दूसरी जाति के कीटों का शिकार करते हैं । इनकी शक्ल इतनी एक सी होती है कि मनुष्य भी इससे धोखा खा जाते हैं, एसैसिन बग इसका एक अच्छा उदाहरण है ।

जिन पशु पक्षियों की नकल की जाति है उन्हें 'माडल' कहते हैं तथा नकल करने वालों को 'मिमिक' अर्थात् नकलची कहते हैं स्पष्ट है कि यदि कोई नकल करना चाहे तो 'मॉडल' तथा मिमिक' दोनों को एक ही क्षेत्र में रहना होगा, जिससे मिमिक, मॉडल की नकल, रहन-सहन तथा शक्ल सूरत दोनों प्रकार से कर सके । अन्यथा परपक्षी इसे पहिचानने लगेंगे या वे मिमिक के साथ मॉडल को भी खा जायेंगे और इससे दोनों को ही हानि होगी ।

क्यों और कैसे
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

श्री जगजीवन राम

अगर नेता फेरी लगाएं तो...

आइये ! आइये !! अपने ही देश के ग्रामीण क्षेत्र का उत्पादन लीजिये। नीम की दातुन दस पैसे में एक।

चरण सिंह

दाद, खाज खुजली और आर-एस-एस को दूर भगाइये

राज नारायण

टुईयां वैद्य
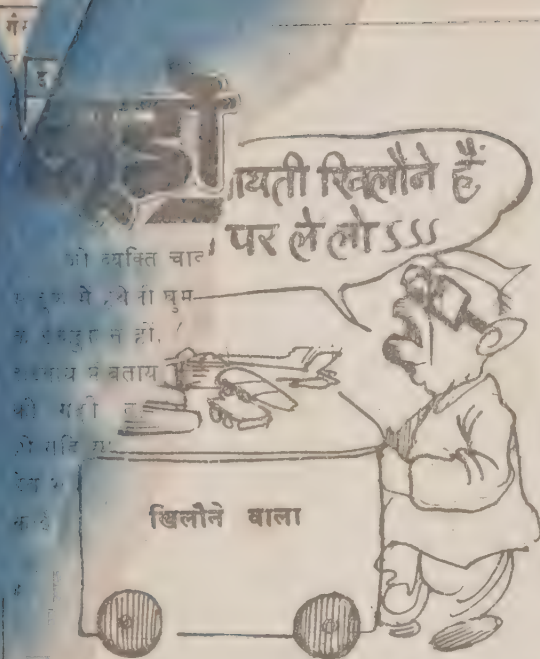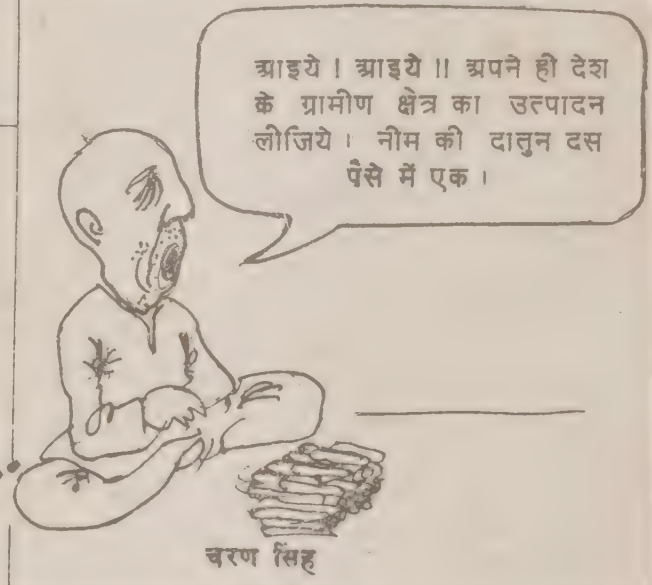
बिजली–ऊर्जा मंत्री: पी० रामचन्द्रन
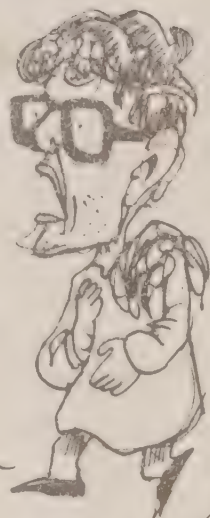
अपनी खाट खड़ी करवा लो ऽऽऽऽ
टाटा नगर
जार्ज फर्नांडीस
असली गुट निरपेक्षता । नकली साबित करने वाले को १००० रुपये इनाम ।
अटल बिहारी वाजपेयी
भाइयों, आपको जल्दी बोनस मिलने वाला है । दिल थाम कर बैठिये । मैं पांच मिनट में बोनस लेकर आया । आप जरा पांच साल बैठिये ।
मधु दंडवते
हमें जन्म भूमि से प्यार है ।
तभी आपके इंडियन एयरलाइंस के जहाज भूमि पर ही पड़े रहते हैं उड़ते नहीं ।
पुरुषोत्तम कौशिक
पांच मिनट में सरदर्द दूर, गठिया का एक महीने में शर्तिया इलाज, छुआ-छूत पांच साल में गायब और गरीबी व बेकारी का दस साल में मुकम्मल इलाज ।
मोरारजी देसाई
नीम हकीम
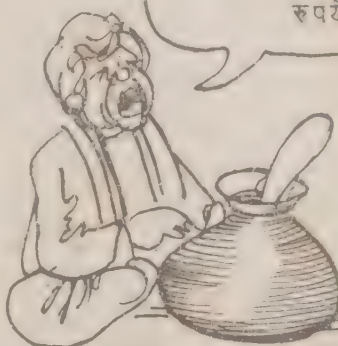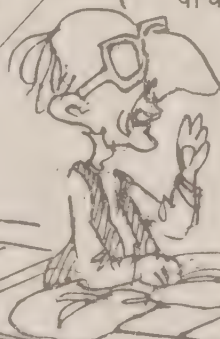
प्रीतपाल बिरात

[illegible] पुरानी है।
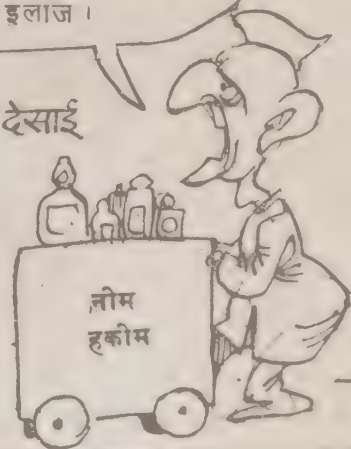
इटली के एक कस्बे में दो दोस्त रहते थे। एक का नाम था मार्को और दूसरे का गोवानी।

एक बार उन्होंने एक दूसरे से वादा किया—जब भी उनमें से किसी एक का विवाह होगा, वह दूसरे को अवश्य ही आमन्त्रित करेगा।

कुछ समय बाद मार्को की मृत्यु हो गई।

गोवानी का विवाह होने लगा तो वह कब्रिस्तान गया और मार्को की कब्र के पास जाकर बोला, 'मित्र ! कल मेरा विवाह होने जा रहा है। अपने वादे के मुताबिक मैं तुम्हें आमन्त्रित करता हूं।'

कब्र खुली और उसमें से मार्को निकल आया।

विवाह की दावत के समय मार्को ने मेहमानों को कई तरह की कहानियां सुनाईं लेकिन वह परलोक के बारे में एक शब्द भी नहीं बोला।

दावत के बाद मार्को लौटने लगा तो गोवानी उसे कब्रिस्तान तक विदा करने गया।

मार्को गोवानी से हाथ मिलाकर अलविदा कहने ही जा रहा था कि गोवानी ने पूछा, 'मित्र ! क्या तुम परलोक के बारे में मुझे कुछ नहीं बताओगे ?' 'नहीं मित्र !' मार्को बोला, 'मैं तुम्हें परलोक के बारे में कुछ नहीं बता सकूंगा। लेकिन यदि तुम जानना ही चाहते हो तो एक दिन के लिए मेरे साथ चलो और सब कुछ अपनी आंखों से देख लो।'

कब्र खोल कर मार्को भीतर घुस गया। उसके पीछे गोवानी भी।

जल्दी ही दोनों मित्र परलोक पहुंच गए।

दिन भर मार्को गोवानी को परलोक में घुमाता रहा। शाम हुई तो गोवानी ने वापिस लौटने की इच्छा जाहिर की।

मार्को कब्र तक आकर गोवानी को विदा कर गया।

कब्र से बाहर आकर गोवानी को बड़ा आश्चर्य हुआ। कल जहां वह टूटे फूटे मकान छोड़ गया था, आज वहां गगन-चुम्बी इमारतें खड़ी हुई थीं। उधर से गुजरते एक बूढ़े को रोककर उसने पूछा, 'इस कस्बे का नाम लीसा ही है न ?'

'जी हां,' बूढ़े ने जवाब दिया।

'बहुत अच्छा।' गोवानी ने सोचा, 'लेकिन मैं यह नहीं जान पा रहा हूं कि मुझे रास्ता क्यों नहीं मिल रहा !' फिर उसने उस बूढ़े से पूछा, 'क्या तुम मुझे उस आदमी का घर बता सकते हो, जिसका कल विवा[illegible] हुआ था ?'

'कल ?' बूढ़े को आश्चर्य हुआ, 'क[illegible] तो यहां किसी का विवाह नहीं हुआ !'

'लेकिन मेरा विवाह तो कल ही हुआ था। और शादी की दावत के बाद मैं अपने मित्र के साथ परलोक चला गया था ?'

'तुम सपना देख रहे हो,' बूढ़ा बोला [illegible] वह आदमी जो अपने दोस्त के साथ परलोक गया था कभी वापिस नहीं लौटा। उसकी कहानी मैंने अपने दादा के मुंह से सुनी थी। फिर बूढ़े ने अपने दिमाग पर जोर डाला 'उस आदमी का नाम शायद गोवानी था।'

गोवानी बोला, 'मेरा ही नाम गोवानी है।'

बूढ़े को बड़ा आश्चर्य हुआ। वह गोवानी को पादरी के पास ले गया।

पादरी को जब विश्वास हो गया [illegible] उसके सामने खड़ा युवक गोवानी ही है, वही गोवानी जिसकी कहानी वह अपने बूढ़ों से कई बार सुन चुका है तो उसने एक रजिस्टर के पन्ने पलटने शुरू किए…सौ साल दो सौ साल…पादरी पन्ने पलटता गया। अन्त में तीन सौ बीस साल पुराने पन्ने पर उसे गोवानी का नाम मिला।

पादरी बोला, 'यह बात तीन सौ बीस साल पुरानी है। गोवानी नाम का आदमी अपने मृत दोस्त के साथ कब्रिस्तान तक गया था, और फिर कभी नहीं लौटा। उसकी पत्नी अस्सी साल की होकर मरी थी।

'ओह।' गोवानी का चेहरा पीला पड़ गया। वह वापिस परलोक लौटने के लिए कब्रिस्तान जाने को मुड़ा।

पादरी ने उससे पूछा, 'सुनो ! जाने से पहले मुझे परलोक के बारे में कुछ बताओगे ?'

गोवानी बोला, 'मैं परलोक के बारे में कुछ नहीं बता सकता। लेकिन अगर तुम जनना ही चाहते हो तो एक दिन के लिए मेरे साथ चलो और सब कुछ अपनी आंखों से देख लो।'

●

मदहोश

हे भगवान यह लम्बी चोंच वाला पक्षी मुझे ही घूर रहा है।

परिणाम

अंक नं० १६ में प्रकाशित **गेंद ढूंढों का** हल—विजेताओं के नामः—

ओम प्रकाश मनिहार
सूरज दरवाजा, पो०-देवगढ़ (मदारिया)
जि० उदयपुर

अमित श्रीवास्तवा
२-ओलु सहस्त्र धारा रोड
देहरादून (यू० पी०)

अंक नं० १७ में प्रकाशित **वर्ग पहेली का हल**

विजेता : चन्द्रजीत पंवार
जितेन्द्र वाचानलय
१०, खेरादीवास
रतलाम-४५७००१
(म.प्र.)
(निर्णय लाटरी द्वारा)

मि	ली	भ	ग	त
त	र		ज	मा
ली		क	ल	श
	रा	ल		बी
इ	त	मी	ना	न

सोचिये (गेंदू) कहानी का सारांश

'निरंतर पारस्परिक सम्पर्क से निर्जीव वस्तुओं की पहचान भी गाढ़ी हो जाती है।'

विजेता:— रजनीश वार्ष्णेय
१, सिविल लाइन्स फैजाबाद (यू.पी.)

अंक नं० १८ में प्रकाशित **पहचानिये** प्रतियोगिता का हल:—

फिल्म का नाम: त्रिमूर्ति

विजेता: राकेश कुमार सिंह
मकान नं० ४६६/११२
छोटा चांदा गंज, लखनऊ
(निर्णय लाटरी द्वारा)

तेल मालिश का विजेता

होरी लाल कनोजिया
पोस्ट बाक्स नं० १०३ नासिक-४२२००२

नारा:—तेल मालिश करवा लो,
बाल की खाल खिचवा लो।

जब मैं उल्लू बना

मैं एक चाय की दुकान चलाया करता था। अपने छोटे भाई को कभी-कभी दुकान पर ले जाया करता था। एक बार एक ग्राहक ने एक कप चाय पीकर दस का नोट दिया, उस समय दुकान पर मैं और मेरा छोटा भाई दोनों थे। उस ग्राहक ने दस का नोट देकर कहा कि अगर छुट्टा नहीं है तो कोई बात नहीं फिर ले लूंगा। यह कहकर वो चला गया और दूसरे दिन वह दुकान पर आया उस वक्त मेरा छोटा भाई दुकान पर बैठा था उससे ९ रुपये ७० पैसे वापिस ले गया। इसी तरह फिर एक दिन मौका देखकर जब सिर्फ दुकान पर मैं ही बैठा था मेरे से भी ९ रुपये ७० पैसे ले गया, कुछ दिन बीत गये। बातों ही बातों में मेरे छोटे भाई ने कहा कि भैया मैं तुम्हें यह बताना भूल गया कि उस ग्राहक को मैंने ९.७० पैसे वापिस कर दिये थे। शायद उस ग्राहक को मैं शक्ल से उल्लू नजर आ रहा था।

मेरा पता
परमजीत सिंह
मकान नं० ३५५/१२B गांधी नगर-दिल्ली

सोचिये साधु राजा का हल—

शिक्षा—'अपना काम किसी अयोग्य व्यक्ति को देना अपनी मौत को बुलावा देना होता है।'

विजेता
विनीत कुमार कोठिया पुत्र पं० बंशीधर जी
बीना (म० प्र०) ४७०.११३

५ रुपये जीतिये

अमीरी-गरीबी

चाय की दुकान पर कुछ लोग बैठे थे। नसीरुद्दीन नामक व्यक्ति आह भर कर बोला, 'काश मैं अमीर होता। मशहूर धनी कारा मुस्तफा जितनी धन-दौलत होती मेरे पास।

चाय की दुकान का मालिक मुस्कराया। 'बड़ी अजीब बात है' वह बोला, कुछ देर पहले कारा मुस्तफा मेरी दुकान पर आये थे और कह रहे थे कि काश वह अमीर न होते। केवल सीधे-सादे गरीब इंसान होते।'

नसीरुद्दीन कहने लगा, 'वह ऐसी बात इसलिये बोला क्योंकि वह पहले ही अमीर है। उसके पास इच्छा है और वह गरीब बनने का तरीका भी जानते हैं। लेकिन मेरे पास तो केवल इच्छा है अमीर बनने की।'

सारांश—इस कहानी का सारांश एक वाक्य में लिख भेजिये। सर्वश्रेष्ठ सारांश को पुरस्कार।

अन्तिम तिथि— ७ जुलाई १९७९

पता: दीवाना साप्ताहिक ८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-११०००२

पुरस्कार ५ रु०

हम इस प्रतियोगिता में हर सप्ताह एक नेता को लेंगे। आपको उस नेता के नाम के अक्षरों मे क्रमवार एक व्यंग्य कविता लिखनी होगी जो उसके कारनामों पर फिट बैठे। उदाहरण के तौर पर हमने राजनारायन जी पर कविता लिखी है। उसी प्रकार आप नीचे लिखे नाम पर कविता लिख भेजिए। नाम के सारे अक्षरों से क्रमवार कविता की लाइनें बनानी चाहिये।

सर्वश्रेष्ठ कविता को पुरस्कार

रायबरेली के बैसाखी नंद हैं ये,
जनता पार्टी की दाल भात में मूसरचंद हैं ये।
नाना बयान रोज अखबारों को देते हैं,
राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की खबर लेते हैं।
यह साहब जिसके पक्ष में खड़े होते हैं,
नादानी से उसी की लुटिया डुबोते हैं।

अ टल बि हा री

दीवाना के कार्यालय में हल पहुंचने की अन्तिम तिथि ७ जुलाई १९७९

उत्तर केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

तुक्कम तुक्का
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

● एक भिखारी से किसी ने पूछा कि पचास साल पहले व अब में क्या अन्तर है। तो उसने उत्तर दिया, 'पचास साल पहले जब हम भीख मांगने जाते थे तो केवल गलियों के कुत्ते ही काटने को दौड़ते थे लेकिन आज हर कोई काट खाने को दौड़ता है।'

● बर्नाड शॉ से किसी ने पूछा, 'किस किताब से आपको सबसे अधिक लाभ हुआ?'

बर्नाड शॉ ने उत्तर दिया, 'चैकों की किताब से।'

● एक आदमी को एक बार भगवान दिखाई दिया! आदमी गदगद हो गया और बोला, 'भगवन आप जैसे सर्वशक्तिमान के लिए एक सौ करोड़ रुपया क्या महत्त्व रखता है?'

भगवन ने उत्तर दिया, 'एक पैसे के बराबर भी नहीं।'

भगत ने फिर पूछा, 'और एक सौ करोड़ वर्ष?'

भगवान, 'एक सैकेन्ड के बराबर भी नहीं।'

भगत गिड़-गिड़ाया, 'हे दयालू मुझे आप एक पैसा दे दीजिये।'

भगवान मुस्काराये, 'जरूर-जरूर क्यों नहीं? अभी एक सैकेन्ड में देता हूं।'

● वह कौन सा सरकारी महकमा है जिसके कर्मचारी काम न कर रहे हों तो पब्लिक को अच्छा लगता है?

फायर ब्रिगेड वाले।

● डाक्टर ने एक मोटी औरत को वजन घटाने की गोलियां दी और चेतावनी दी, वजन घटाने की ललक में यह गोलियाँ ज्यादा न खाना। नुकसान हो सकता है। मेरा पिछला मरीज जब मेरे पास आया तो वह १२० कि० ग्रा० वजन का था! इन गोलियों को वह ज्यादा खा गया और आठ सप्ताह बाद उसका वजन ४० किलो रह गया कफन और फूलों समेत!'

● एक युवक नेवी में भर्ती होने भर्ती दफ्तर गया। वहां नेवी के रिकरुटिंग अफसर ने पूछा, 'तुम तैरना जानते हो?'

युवक 'क्यों साहब आपके पास जहाज नहीं है क्या?'

हरियाणा हो या कोई और प्रांत जनता पार्टी का हर
मुख्य मंत्री एक ही स्वर में बोलता है कि उसका
विरोध कितने भी जोर शोर से किया जा रहा हो
उसकी सरकार पर कोई संकट नहीं. पर......

मेरी हालत बहत...
म...म ... ज़... ज़......

?

—मरांठी—

पृष्ठ [illegible] से आगे

[illegible] अच्छी थी···कितनी प्यारी थी उसे [illegible] था···।
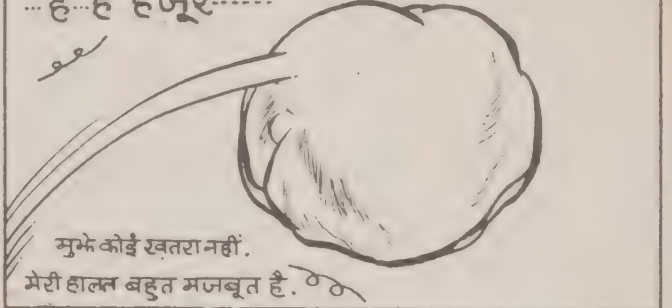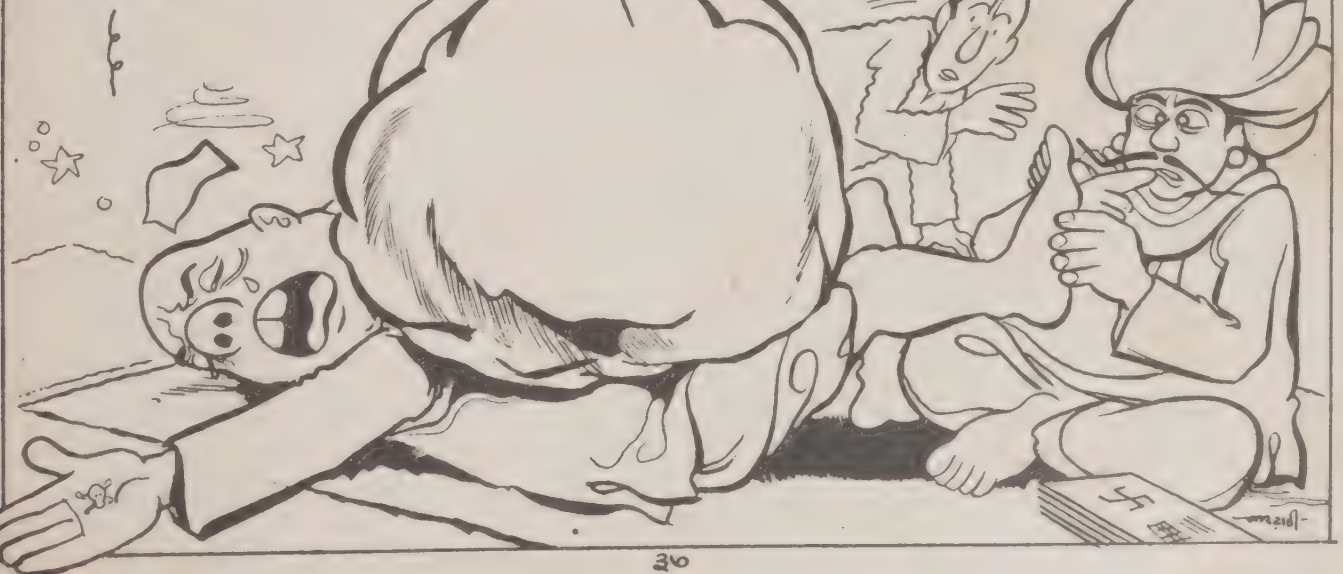
[illegible] फूलवती···बड़ी होकर न जाने [illegible] हो गया है···उसकी आंखों में [illegible] भर गई है···कामुकता···यौवन की [illegible] ने उसे निर्लज्ज-सा बना दिया है···[illegible] उसने बेधड़क उसके गले में बाहें डाल [illegible]···उससे इतनी गर्मी से लिपट गई कि अगर वह उस समय संभल नहीं जाता तो अवश्य कोई पाप हो जाता···वह गिर जाता···[illegible] बात है···यह लड़की बचपन में इतनी प्यारी, इतनी भोली और इतनी अच्छी थी···कली-सी···और अब···अब वह बड़ी हो गई है···चन्द दिन में वह किसी की पत्नी बन जाएगी···डाक्टरनी कहलाएगी।

तभी ट्रेन स्टेशन पर आ रुकी···विनोद ने जल्दी ही बुआ वाला डिब्बा ढूंढ़ा और कुली के साथ सामान उतरवाने में उनकी सहायता करने लगा। आखिरी चीज बड़ा-सा आईना था।

'जरा संभालकर···बड़ा नाजुक आईना है।' फूलवती के पिता ने विनोद से कहा।

'आप चिन्ता मत कीजिए नाजुक सामान के बारे में मैं बहुत सावधान हूं···' उसने यह वाक्य फूलवती को देखकर कहा था···फूलवती सचमुच निखरकर गुलाब का विकसित फूल बनी हुई थी···शायद शादी की खुशी से···तो वास्तव में वह इस शादी से बहुत खुश है? विनोद ने सोचा···और मुस्करा पड़ा।

इण्टरमीडिएट का अंतिम वर्ष था।

परीक्षा आरम्भ होने में केवल दो महीने रह गए थे···विनोद बहुत परिश्रमकर रहा था···घर के मामलों में उलझा हुआ वह काफी परेशान रहा था और पहले ठीक स्टडी नहीं कर पाया था, खर्चे की तंगी, घर का गिरवी रखा जाना, बनिए के तकाजे···और अन्य छोटी-मोटी चिन्तायें उसे घेरे रखती थीं···उसका स्वास्थ्य भी कुछ गिर गया था···यूनिवर्सिटी की परीक्षा थी···दाखिला देना था और कुछ कालिज के पैसे भी सिर पर थे जिन्हें वह चुका नहीं पाया था—उसे सौ रुपये की तुरन्त आवश्यकता थी···और फिर धन-अभाव की वही समस्या उसके सामने थी जो मैट्रिक पास करके कालिज में दाखिला लेते समय थी···घर में एक पैसा नहीं था···कोई ऐसा प्रियजन भी दिखाई नहीं देता था जो आड़े आकर सहायता कर देता···उसे शंका थी कि वह शायद परीक्षा में न ही बैठ पाए, क्या किया जाए परिस्थितियां ही प्रतिकूल थीं···वह सोचता···अच्छा होता अगर मैट्रिक के बाद ही वह कहीं क्लर्क हो जाता···या पिताजी की बताई हुई नौकरी कर लेता···इन दो वर्षों में कुछ कमाई ही की होती···अब अगर दो वर्ष गंवाकर भी परीक्षा में न बैठ सका तो क्या लाभ इस पढ़ाई का।

फूलवती की शादी को लगभग एक वर्ष हो गया था लेकिन फूलवती के पिता ने अभी तक एक पैसा नहीं लौटाया था···हर महीने वह कोई-न-कोई बहाना लिखकर टाल देते···पिताजी चुप होकर बैठ जाते···कर भी क्या सकते थे···कुल्हाड़ी तो स्वयं ही अपने पांव पर मारी थी।

फूलवती की शादी के बाद एक नई मुसीबत पड़ गई थी···बात यह थी कि फूलवती का पति डाक्टर शर्मा अच्छा मिलनसार आदमी था···उसका अपना कोई मकान तो था नहीं···डिस्पेंसरी के ही एक भाग में रहता था···खाना किसी होटल में खा लेता था—शादी के बाद कोई अच्छा मकान न मिलने के कारण यहीं रहने लगा था। बुआ वाला कमरा उनको दे दिया गया था···खर्चा सारा पिता जी ही उठाते थे इसलिए कि वह ठहरा दामाद और अब दामाद से कौन मांगे—? पिताजी की अपनी तनख्वाह बहुत कम थी···बड़ी मुश्किल से गुजारा चलता था—हर महीने कुछ कर्जा और चढ़ जाता···मकान तो अब महाजन के हाथ में था ही और उसे थोड़ा-बहुत देने में आपत्ति नहीं थी।

डाक्टर शर्मा अच्छे पैसे बना लेता था—और जो कुछ भी वह कमाता फूलवती को दे देता—फूलवती सारा पैसा अपने पर्स में जोड़ती जाती—फूलवती का स्वयं कहना था कि ऊपर का खर्चा निकाल कर उसके पर्स में बारह सौ रुपये जमा हो चुके हैं।

बारह सौ रुपये—विनोद ठंडी सांस लेकर सोचता। फूलवती के पर्स में इतने ढेर से रुपये हैं और यह बात वह सबसे कहती फिरती है—उसे यह भी पता है कि विनोद केवल दो सौ रुपयों के लिए परेशान है—और उसके पिताजी और मां भी चिन्तित हैं—लेकिन वह इतना भी नहीं कर सकती

कि दो सौ रुपया ही निकाल कर मां जी को दे दे कि इस समय विनोद की पढ़ाई में कोई बाधा न पड़े—उफ्—कितने स्वार्थी हैं यह लोग···कितनी नीच है यह दुनिया।

यह फूलवती वही है जो बचपन में विनोद के बिना खाना नहीं खाती थी···विनोद के सिर में पीड़ा होती तो घंटों उसका सिर दबाती और उसके लिए प्रार्थना करती कि भगवान् उसको जल्दी अच्छा कर दे···कुछ दिन के लिए गांव जाती तो ऐसे रोती हुई जाती जैसे घर से कहीं बहुत दूर जा रही हो—विनोद की खुशी को अपनी खुशी समझती—और उसके दुःख को अपना दुःख—लेकिन अब वह इतना क्यों बदल गई है? —फूलवती तो वही थी—उसका स्वभाव बदल गया था कि···अब उसके मन में विनोद के प्रति कोई सहानुभूति नहीं थी—या कोई प्रतिक्रिया थी—वह विनोद से बदला लेना चाहती थी उस अपमान का जो विनोद ने उसका प्यार ठुकरा कर किया था—ऐसी ठेस प्रायः नारी के 'अहं' को और भी तीव्र कर देती है—विनोद से उसको एक पड़ोसी के समान सहानुभूति भी नहीं थी।

बड़ी बुआ मथुरा चली गई थीं—उनके लड़के रमेश को वहां किसी फर्म में अच्छा काम मिल गया था—उसने वहां दो कमरे किराये पर ले लिये थे—रह गई मासी—तो उनसे सम्बन्ध समाप्त हो चुके थे—यहाँ आने पर उन्होंने पिता जी के नाम पर बनिये से डेढ़ सौ रुपये का राशन लिया था, वह पैसे देना तो एक ओर उल्टा लड़कर चली

गई—रघु चूंकि उनका देवर था इसलिए उसके आने का प्रश्न ही नहीं उठता था—दूसरे राधा वाली बात के बाद वह मां और पिताजी से आंखें भी नहीं मिलाता था··· वीरेन्द्र मामा को अपनी छोटी बहन से अधिक प्यार था इसलिए वह भी नहीं आते थे—।

विनोद जब इन रिश्तेदारों के बारे में सोचता तो उसका जी चाहता था कि सबको एक पंक्ति में खड़ा करके गोली मार दे··· और फिर बन्दूक की नाल अपनी कनपटी पर रख कर एक फायर कर डाले ताकि यह किस्सा ही समाप्त हो जाए—कैसे कृतघ्न रिश्तेदार हैं···ऐसे लोगों की तो सूरत भी देखना अशुभ है···लेकिन अजीब बात है, पिताजी और मां की आंखें अब भी नहीं खुली थीं···अगर उनकी आंखें खुल गई होतीं तो वह डाक्टर और फूलवती को घर पर न रखते···वह तो चैन से रहते हैं और खाते-पीते हैं···अपने सब पैसे जोड़ते जाते हैं और उनका बोझ उठाएं हम लोग···पिताजी की कमर तक झुक गई इस बोझ-तले···और उन्होंने एक दिन भी मुह से कुछ नहीं कहा।

विनोद जानता था कि दोष अधिक फूलवती का है···उसके पति का नहीं···उस बेचारे को क्या पता कि अन्दर से हमारी स्थिति क्या है···वह तो यह समझता होगा कि इतने बड़े उपा मैनशन के मालिक अच्छे खाते-पीते लोग होंगे. लेकिन फूलवती से तो कुछ छिपा नहीं था···वह तो इस घर को अन्दर-बाहर से जानती थी···लेकिन धिक्कार है उस पर···उसका लहू इतना सफेद हो गया कि एक बार केवल शिष्टता के नाते ही सही कभी मां से पूछा तक नहीं कि उनको कोई कष्ट तो नहीं···इतने पैसे उसके हाथ में रहते हैं···क्या वह थोड़े से रुपये कभी चुपके से माँ को खर्चे के लिए नहीं दे सकती थी···लेकिन नहीं उसने मामा-मामी के सारे उपकार भुला दिये हैं···और इधर मामा-मामी की शिष्टता देखो कि इस आर्थिक दशा में भी यह नहीं कह सकते कि अब दो फालतू आदमियों का खर्चा उठाना उनके बस में नहीं···अब उन्हें अपना मकान लेकर अलग रहना चाहिए···लेकिन वह अब भी हंसकर फूलवती से बात करते और अपनी तंगी का एक शब्द भी मुंह पर न लाते—।

धीरे-धीरे फीस जमा होने की अन्तिम तिथि निकट आती जा रही थी और विनोद का दिल बैठता जा रहा था। स्पष्ट है कि ऐसी मनोदशा में स्टडी को भी मन नहीं चाहता···जब वह परीक्षा ही में नहीं बैठ सकता था तो स्टडी से क्या लाभ ?···इसीलिए वह आज शाम को ही पढ़ने की बजाए बत्ती बुझा लेट गया···उसे लेटे चंद ही मिनट हुए थे कि फिर किसी ने अचानक बत्ती जला दी। विनोद उठकर बैठ गया··· बत्ती पिताजी ने जलाई थी वह उसके पास बैठते हुए बोले—

'क्यों बेटा···तबियत तो ठीक है ना ?'

'जी हां ठीक है···।' विनोद ने शिष्टता से उत्तर दिया।

'फिर आज स्टडी क्यों नहीं कर रहे ?'

'क्या होगा पिताजी स्टडी करके जब परीक्षा ही में नहीं बैठ सकता।' विनोद ने बुझे हुए से स्वर में कहा।

'ऐसा मत सोचो···तुम्हारा पिता अभी जिन्दा है···तुम परीक्षा में जरूर बैठोगे··· उठो स्टडी कर लो।'

'पिताजी···सच तो यह है कि मेरा मन अब पढ़ाई में नहीं लगता।'

'क्यों ?'

'पता नहीं क्यों ? बस, आप मुझे वही डेढ़ सौ रुपये महीना वाली नौकरी दिलवा दीजिए तो ठीक रहेगा।'

'मैं जानता हूं बेटे···यह तुम नहीं बोल रहे तुम्हारा कर्त्तव्य बोल रहा है।' पिताजी ने ठंडी सांस लेकर कहा, 'तुम मेरी चिन्ताओं को अनुभव करते हो, इसीलिए ऐसा सोच रहे हो···लेकिन मैं ऐसा न होने दूंगा··· तुम्हारी इच्छा है पढ़ने की, तो अपनी इच्छा अवश्य पूरी करो···जितना भी पढ़ सकते हो पढ़ो···जब तक मेरे शरीर में लहू की अन्तिम बूंद है मैं कहीं-न-कहीं से तुम्हारी पढ़ाई का प्रबन्ध करता रहूंगा···तुम्हें आर्थिक अभाव अनुभव नहीं होने दूंगा।'

'लेकिन···पिताजी···मैं यह नहीं देख सकता कि आप इन बूढ़ी हड्डियों के साथ मेरे लिए कष्ट झेलें।'

'मुझे लज्जित न करो बेटा···तुम्हारी आयु यह बातें सोचने के लिए नहीं है···अभी तुम्हारे दिन खाने-पीने और खेलने के हैं··· घरेलू मामलों की तुम्हें चिन्ता नहीं होनी चाहिए···यह मेरा काम है···लेकिन मैं जानता हूं कि तुम कुछ अधिक भावुक हो और मेरी चिन्ताओं से बेचैन [illegible]—यह ठीक है कि यह चिन्ताएं हमने स्वयं ही उत्पन्न की हैं···हमने अपनी औलाद के बारे में कभी नहीं सोचा जो कमाया पढ़ने में उड़ा दिया···और उन सम्बन्धियों पर व्यय करते रहे जिनसे एक समय के खाने की भी आशा नहीं की जा सकती···अब मेरी आंखें खुल गई हैं बेटे···मैंने सोच लिया है हर मामले में सोच-विचार कर कदम रखूंगा···दृढ़ रहूंगा···तुम हमारी भूलों का दंड क्यों भुगतो···तुम अपना भविष्य नष्ट न करो··· पढ़ो बेटा खूब पढ़ो···जब तक मैं हूं तुम्हें नौकरी करने की आवश्यकता नहीं, भगवान सब ठीक करेगा।'

'लेकिन पिताजी मेरी आत्मा यह स्वीकार नहीं करती कि इन विकट परिस्थितियों में मैं पढ़ाई चालू रखूं।'

'तुम अपनी आत्मा को इण्टरमीडिएट की परीक्षा तक के लिए तो रोको···बाद में देखा जाएगा।'

यह कहकर पिताजी ने विनोद के सिर पर हाथ फेरा और दूसरी ओर मुँह फेर कर चले गए।

विनोद के सीने से इस समय तो बोझ हट गया···पिता की छाया भी क्या महान होती है···विनोद परिस्थितियों की गम्भीरता को जानते हुए भी अनुभव करने लगा कि पिताजी हैं तो हर समस्या स्वयं सुलझ जाएगी···उसमें एक नई स्फूर्ति जाग उठी, एक नया साहस उत्पन्न हुआ और वह मन लगाकर पढ़ने बैठ गया···उस रात वह सुबह चार बजे तक पढ़ता रहा।

शेष आगामी अंक में

सतर्कता

—आजाद रामपुरी

दफ्तर में,
दो घण्टे लेट आये
एक खुर्राट अफसर ने,
फाइल से सिर टिकाए,
नींद से ऊंघ रहे,
अपने बाबुओं से जब पूछा—
'ये क्या हो रहा है आराम ?'
तो बाबू लोग अपने दोनों हाथों से,
आंखें मींड़ते हुए बोले—
नहीं बाबूजी,
हम तो झुककर कर रहे हैं
आपको सलाम।

तर्क-कुतर्क

तर्क—कौन सी कली है जो कभी फूल नहीं बनती ?
कुतर्क—छिपकली ।
तर्क—आजकल सब चीजें महंगी हैं ?
कुतर्क—परसों सस्ती होंगी ।
तर्क—यार तुम्हारे जूते बहुत आवाज करते हैं ?
कुतर्क—किसी से डरते थोड़े ही हैं यह ।
तर्क—मेरी आंखें धोखा नहीं खा सकती हैं ।
कुतर्क—कुछ और खिलाओ फिर ।
तर्क—मेरी खोपड़ी मत चाटो यार ।
कुतर्क—क्या इस पर जूते मारने वालों का ही हक है ?
तर्क—आपके लड़के ने आज मुझे बहुत गन्दी गाली दी ।
कुतर्क—तो क्या पहले अच्छी गालियां देता था ?
तर्क—आज मास्टर जी ने मुझे सजा दी ?
कुतर्क—मुझे भी दिखाओ कैसी है ।
तर्क—सेब कैसे दिए हैं ?
कुतर्क—जी तोल कर ।
तर्क—मुझे ऐसा लग रहा है कि जैसे मेरा दिमाग पहले से कमजोर हो गया है ।
कुतर्क—किसी अच्छे बढ़ई से मजबूत करवा लेना ।
तर्क—कल हमारे यहां से बिजली चली गई ।
कुतर्क—रोका क्यूं नहीं?
तर्क—मैं कारखाने जा रहा हूं ।
कुतर्क—'कार' भी कोई खाने की चीज है ?
तर्क—आज राधेश्याम ने घनश्याम को अच्छी तरह झाड़ा ।
कुतर्क—धूल जम गई होगी उस पर !
तर्क—उसको गोली मारो यार, अपनी बात करो ।
कुतर्क—क्या कत्ल का इल्जाम अपने सिर ले लोगे तुम ?

तर्क-कुतर्क
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

भूल सुधार

—गोपाल चौरसिया

मंत्री बनने से पूर्व,
वे हमेशा लिखते रहे ।
लिखकर, भेजते रहे ।
लेकिन,
सारे लेख 'सधन्यवाद'
लौटते रहे ।
किन्तु मंत्री पद मिलने के बाद ।
करते हुए 'भूल-सुधार'—
एक,
संपादक ने लिखा ।
'हमें अत्यंत खेद है ।'
कि—कैसे…?
आप जैसे !!
हमारी-निगाह से बच गये,
और आज दूसरी जगह छप गये ।

—खाना—

हुड़दंग नगीनवी

पतिदेव ने झुंझलाते हुए
कहा पत्नी से,
रोटियां भी कच्ची और सब्जियां भी
प्रिये, कैसा पकाया है, आज यह खाना
पत्नी ने, शालीनता पूर्वक,
दिया उत्तर !
आप ही ने तो कहा था कि,
शादियों और दावतों में पक्का खाना
खाते खाते,
पेट खराब हो गया है,
कच्चा खाना पकाना ।

मूल्यांकन

—जय प्रकाश 'राज'

उनकी
अनवरत खुशामद से
खुश हो
उसने काम ये किया ;
वेटिंग लिस्ट में
सबसे ऊपर
उनको स्थान दे दिया !

नेता का दुःख

रामचन्द्र शर्मा 'दुनियादार'

हम क्यों रहे कुंआरे ?
सियासत हमको रास न आई सबने पत्थर मारे ।
बचपन बीता रोते-धोते नंगा जिस्म संभारे ।
यौवन बीत गया गुरुकुल में ऊंची चुटिया धारे ।
जोड़-तोड़ कर लीडर हो गये अच्छे भाग्य हमारे ।
एक-एक कर थोथे निकले वायदे अपने सारे ।
ताजमहल-से होने आये केश अपने कजरारे ।
दिन कटता इन्तजार में रातें गिन-गिन तारे ।
अब तो हमको रास आ गये अपने आंसू सारे ।
हम क्यों रहे कुंआरे ?

औचित्य

—आजाद रामपुरी

निरक्षरता,
देश के लिये कलंक,
एवं गरीबों के लिए
एक बड़ा अभिशाप है ।
क्योंकि,
हर पढ़ा-लिखा व्यक्ति,
अपढ़ व्यक्ति को लूटने के लिये,
ठगों का भी बाप है ।
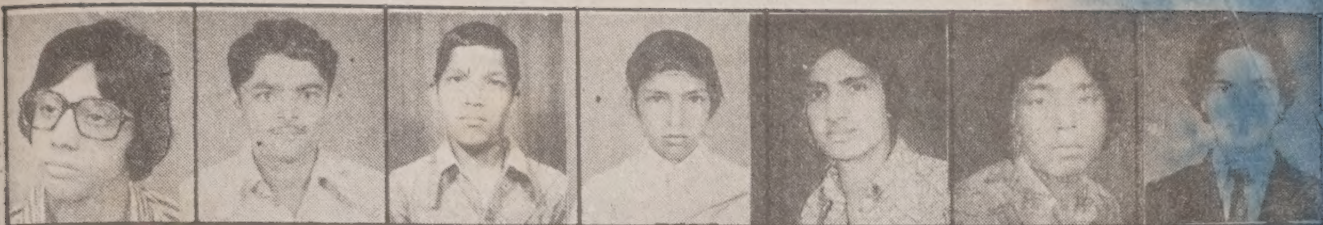
सनमुख द्वारा मेंहदी क्लाथ स्टोर्स, गोल बाजार, रायपुर (म० प्र०), २० वर्ष, पत्र-मित्रता करना और शायरी लिखना।

सोहनलाल गहेलोत, पो० लाम्बिया, वाया आनन्दपुर कालु (राजस्थान), २२ वर्ष, क्रिकेट खेलना, फिल्में देखना, दोस्ती बढ़ाना।

राजीवरंजन मिश्र, मिश्र बाजार, गाजीपुर, १२ वर्ष, दीवाना पढ़ना, क्रिकेट खेलना, चित्रकारी करना, अपना काम सम्भालना।

निर्मल भाटिया, एच० के० भा० दुर्गा विलास ५ रोड, एल० आई० सी० के० सा०, १६ वर्ष, फिल्में देखना, फुटबाल खेलना।

रूपचन्द पंजवानी, श्री ग्राम रायपुर, १६ वर्ष, फिल्म देखना, अपने से बड़ों का आदर करना, पढ़ना और परिश्रम करना।

लालचन्द जादु संगत, हरिजन बस्ती बड़ी गवाड़, १७ वर्ष, पढ़ना, क्रिकेट खेलना, टिकट संग्रह करना, आपस में मिल-जुल कर रहना।

निरंजन कुमार डोकानियाँ, जमुई बाजार, मुंगेर, १८ वर्ष, फिल्म देखना, नाटक में भाग लेना, विकेटकीपिंग करना, पढ़ना।
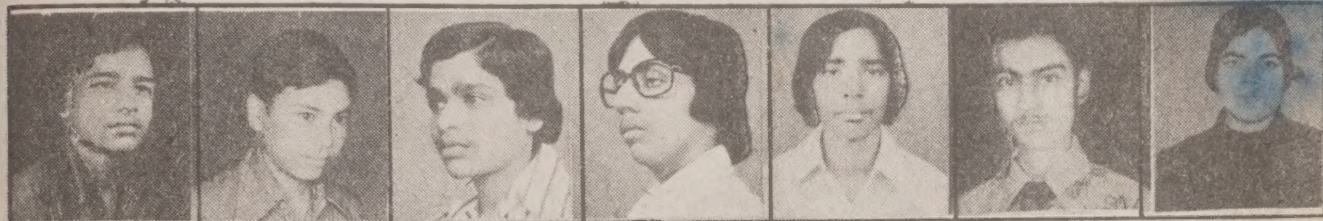
राजीव माहेश्वरी, ८८-बी, वकील रोड, नई मण्डी, मुजफ्फर नगर (यू० पी०), १६ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, बैडमिन्टन खेलना।

ओमप्रकाश धीर सुपुत्र श्री प्यारा लाल, ३ ए०/६० न्यू टाउन शिप फरीदाबाद, १३ वर्ष, चित्रकारी करना तथा घूमना-फिरना।

राजेश कुमार धर्मानी, ईश्वर महल बैरन बाजार, रायपुर (म० प्र०), १५ वर्ष, पत्र-मित्रता करना और फिल्मी गीत सुनना।

हरदयाल मध्यान, मकान न० ४/८६५ फाफाडीह छोटी लाइन रायपुर, १८ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, दूसरों का भला करना।

शिवन लाल, बैरन बाजार, ईश्वर महल रायपुर (म० प०), १६ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, माता-पिता की सेवा करना।

चन्द्र प्रकाश, २३२३ नेहरू कालोनी, हाथरस (उ० प्र०), १६ वर्ष, फिल्में देखना, फोटो छपवाना, ज्ञानवर्धक पुस्तकें पढ़ना, खेलना।

सुनीलदत्त शर्मा, मकान न० ४३२, रामपुरा, दिल्ली-३५, १७ वर्ष, क्रिकेट खेलना, नदी में तैरना, पढ़ना तथा हंसना-हंसाना।

अनिल वत्ता, मकान न० ४७, प्रेमसिंह गली, जैतो, १५ वर्ष, टिकट संग्रह करना, पत्र-मित्रता करना, टेलीविजन पर पिक्चर देखना।

प्रभजोत सिंह चुघ मकान न० १६२/४, शास्त्री नगर, लुधियाना, १७ वर्ष, रेडियो ठीक करना, गिटार बजाना, गाने गाना।

अशोक कुमार डाग्लिया, १४४, प्रभु दी क्लाथ मार्केट, इन्दौर, १३ वर्ष, देव आनन्द की फिल्म देखना, महराल के गाने सुनना।

सुबोध संघी, ६ ८, जवाहर गंज पान दरीबा जबलपुर, २० वर्ष, पत्रमैत्री करना, सभी छोटे बच्चों से अधिक प्यार करना।

भवसागर मानन्धर, ५-झोछें, न्हुसाल-५८ काठमाडौ नेपाल, १८ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, फुटबाल खेलना, सुबह को व्यायाम करना।

एन० के० वज्राचार्य, ५/७७ झोछें न्हुसाल, काठमाडौ, २७ वर्ष, गाना गाना, फिल्म देखना, शतरंज खेलना तथा दौड़ना।

शाह-शाह उल्लाह खाँ 'साकी' बिलासपुरी, बिलासपुर, जिला रामपुर, १६ वर्ष, शायरी करना, रोज एक नयी दोस्ती करना।
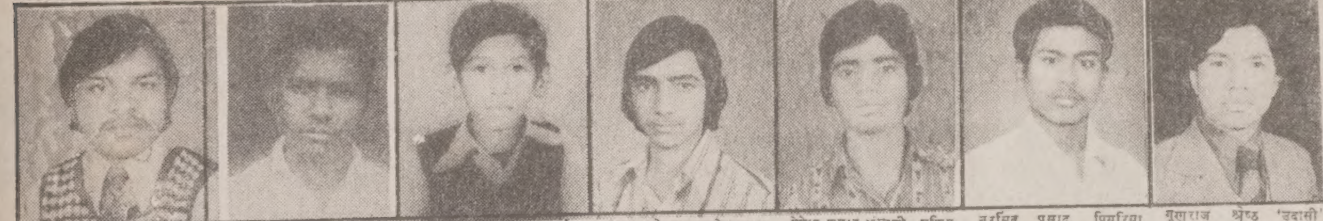
महेन्द्र जैन, १३/१ छोटी ग्वाल टोली इन्दौर, २६ वर्ष, मित्रता करना, मुस्कराना, पढ़ना, टी० वी० पर फिल्म देखना।

मो० फरोग उद्दीन अंसारी, न्याटोला फुलवारिशरिफ (पटना), १६ वर्ष, पत्र-मित्रता करना और पत्रिकायें पढ़ना।

सुरेशचन्द तिवारी, क्वार्टर नम्बर जे०/४ सी० रेलवे स्टेशन आगरा, १४ वर्ष, दीवाना पढ़कर दीवाना बनना तथा हंसना।

संजय सुरेका, बलदेव दास जैतरूप गोल बाजार, कटनी (म० प्र०), १८ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, उपन्यास पढ़ना, दौड़ना।

देवेन्द्र कुमार भंसाली, मुकिम बोदरा का मौहल्ला, बीकानेर, १७ वर्ष, उपन्यास पढ़ना, फिल्म देखना, खेलना और देखना।

नरसिंह प्रसाद, पियरिया पोखरी, मकान नम्बर एस० १२/५५ ए०-२, १५ वर्ष, पत्र-व्यवहार करना, दादागीरी दिखाना।

गुणराज श्रेष्ठ 'उदासी' १४/२२७ क्षेत्रपाटी, काठमाण्डो (नेपाल), १७ वर्ष, पढ़ना, पत्र-मित्रता करना, रेडियो सुनना।
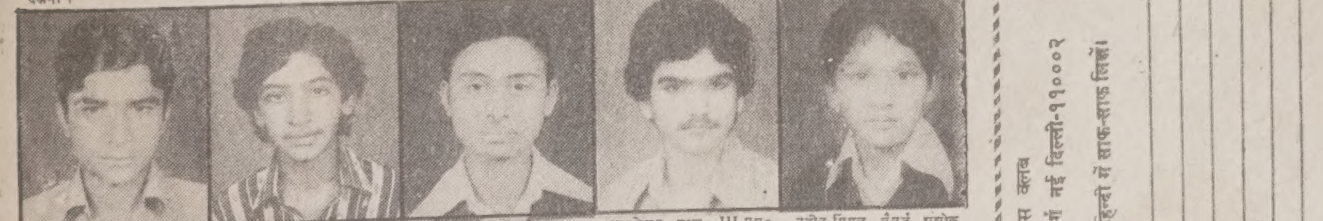
पवन गुप्ता, श्री ओ० पी० गुप्ता, एडवोकेट दाल बाजार, लश्कर, १४ वर्ष, गप्पें मारना, पत्र-मित्रता करना, क्रिकेट खेलना।

हँस कुमार गुलियानी, ५७२ सुदर्शन पार्क, नई दिल्ली, १६ वर्ष, फिल्मी गीत सुनना, फिल्म देखना, मित्रता करना, सेहत बनाना।

वासुदेव प्रसाद, राजेन्द्र प्रसाद कतरास मोड़ झरिया, धनबाद, १५ वर्ष, पढ़ना, गरीबों की सहायता करना, साईकिल चलाना।

चन्द्रशेखर लाल, III एम० आई० जी० एच० कंकड़ बाग कालोनी, पटना, १६ वर्ष, फिल्म देखना, दीवाना पढ़ना, टेलीविजन देखना।

नवीन सिंगल, मैसर्ज अशोक राईस मिल्ज सिरसा, १० वर्ष, मजाक करना और दूसरों से करवाना, फिल्म देखना, दोस्ती करना।

दीवाना फ्रैंड्स क्लब के मेम्बर बन कर फ्रैंडशिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिए जिसे दीवाना तेज साप्ताहिक में प्रकाशित कर दिया जायेगा।

पूरा नाम लिखना न भूलें।

हमारा पता: दीवाना फ्रैंड्स क्लब
८-ब बहादुरशाह ज़फर मार्ग नई दिल्ली-११०००२
कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें।

नाम ________
पता ________
आयु ________ शौक ________

...प्रेस, नया बाजार, दिल्ली में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिए पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित। प्रबन्ध सम्पादक विश्वबन्धु गुप्ता।

मो० जहांगीर—रांची : गरीबचन्द जी आप का वजन क्या है और आपकी पूंछ की लम्बाई कितनी है ?

उ० : आजकल मैं सख्त डाईटिंग कर रहा हूं अतः पहले से वजन तीन ग्राम कम हो गया है। पूंछ की लम्बाई गर्मियों में बढ़ जाती है और सर्दियों में सिकुड़ जाती है।

मोहन प्रकाश अग्रवाल—ग्वालियर : आप कुवांरे हैं या शादी-शुदा ?

उ० : हमारी जाति में सब कुवांरे होते हैं क्योंकि दहेज की प्रथा अभी शुरू नहीं हुई है अतः शादी में किसी की रुचि नहीं है।

प्र० : गरीबचन्द जी, अगर आप सिलबिल-पिलपिल के घर दुःखी हों तो मेरे घर आ जाइये ?

उ० : मैं खुद तो व्यस्तता के कारण आ नहीं पाया। हां, मैंने आपके घर सद्‌भाव यात्रा पर अपने प्रतिनिधियों का एक डैलीगेशन भेज दिया है। जिस दिन आपको अपने घर कोई चीज कुतरी मिले समझ लेना डैलीगेशन पहुंच गया है।

मदनकिशोर होतवानी—रायपुर : गरीबचन्द जी मुझे रात में सोते वक्त सपने में भूत एवं जिन्द दीखते हैं आप बताइये कि मैं उन्हें कैसे भगाऊं ?

उ० : आपने यह नहीं लिखा कि आप खुद क्या हैं ? आप खुद भी भूत या जिन्द हैं तो परेशानी को बात नहीं ! ये सामान्य स्वप्न है।

> गरीब चन्द की डाक
> दीवाना साप्ताहिक
> ८-बी, बहादुर शाह जफर मार्ग
> नई दिल्ली-११०००२

किस्मत की मारी एक बेचारी योगिता बाली

—विजय भारद्वाज

योगिता बाली एक सुन्दर अभिनेत्री हैं, इन्होंने बाल कलाकार के रूप में सर्वप्रथम फिल्म 'जवाब आयेगा' में कार्य किया और बेबी पिंकी के नाम से प्रसिद्ध हो गईं। इनका घर का नाम पिंकी ही है। २६ दिसम्बर को बम्बई में इनका जन्म हुआ। अपने जमाने की प्रसिद्ध अभिनेत्री स्व० गीता बाली की यह भांजी हैं।

व्यस्क होने पर यह फिल्म 'पर्दे के पीछे' में बतौर नायिका आईं। परवाना, सौदा, भतीजा, आखरी कसम आदि इनकी उल्लेखनीय फिल्में रही हैं।

यदि यह कहा जाये कि योगिता, ने अपने फिल्मी कैरियर के बारे में कभी गम्भीरता से नहीं सोचा, तो गलत न होगा। योगिता ने फिल्म उद्योग में प्रवेश करते ही अभिनय की ओर ध्यान देने की बजाय रोमांसों में मजा लिया। एक लम्बे समय तक किरण कुमार और योगिता बाली का रोमांस चला। दोनों ही कलाकार अपनी फिल्मों से ज्यादा अपने रोमांस पर ध्यान देने लगे। नतीजा आज सामने है। आज ना कोई किरण कुमार को पूछता है ना योगिता बाली को। योगिता तो एक-दो फिल्मों में अब भी काम कर रही है किरण कुमार तो हिन्दी फिल्मों से बिल्कुल एक तरफ हट गया [illegible] दिया गया है) वह अब गुजराती [illegible] गुजराती कन्याओं के चक्कर में [illegible]

रेखा और योगिता ने फिल्[illegible] लगभग एक ही साथ प्रवेश किया [illegible] गहरी सहेलियां थीं। आज रेखा [illegible] की अभिनेत्री बनने के स्वप्न [illegible] जबकि योगिता अब भी प्रोड्यूस[illegible] चक्कर लगाती दिखाई देती हैं। [illegible] नवोहिता थी, तब देश की रेखा [illegible] रोमांस की खबरों से घिरी रहने [illegible] काम में ध्यान देती थीं। और [illegible] सैट छोड़कर भी चली जाती [illegible] निर्माता या निर्देशक उफ् तक [illegible] रेखा की जी हजूरी करते हैं। रे[illegible] उदाहरण इसलिये दिया गया है [illegible] को पहले संघर्ष, मेहनत करके अप[illegible] क्षमता का परिचय देना चा[illegible] करना बाद की बात होती है।

योगिता बाली की असफलत[illegible] प्रमुख कारण यह भी है कि वह अ[illegible] सर्वोच्च अभिनेत्री समझती हैं [illegible] दूसरों के विपरीत।

योगिता के बाद में आने वा[illegible] ही अभिनेत्रियां इनसे आगे निकल [illegible] जिनमें विद्या सिन्हा जैसी विवाहि[illegible] भी हैं और रंजीता, जरीना, टीन[illegible] सुलक्षणा पण्डित, सोभा आनन्द [illegible] गोस्वामी जैसी कुंवारियां भी हैं। [illegible] अभिनेत्रियां आज योगिता से आगे [illegible]

अपनी से तिगुनी आयु वा[illegible] कुमार से विवाह करने पर योगि[illegible] न केवल चर्चा का, उपहास का [illegible] अपितु इनके कैरियर पर भी [illegible] पड़ा और नतीजा यह निकला [illegible] साथी अभिनेत्रियों से यह बहुत पी[illegible] गईं।

किशोर कुमार से अलग होने [illegible] अब फिर योगिता अपने फिल्मी [illegible] दिलचस्पी लेने लगी है और 'ख्वा[illegible] उस्ताद) आदि फिल्मों में आ रही [illegible] क्या योगिता फिल्मी पर्दे की सफ[illegible] बन पायेंगी ? इसके बारे में अभी [illegible] कहा जा सकता।

पाठक यदि दीवाना साप्ताहि[illegible] इस लेख का जिक्र करेंगे तो योगि[illegible] हस्ताक्षर युक्त फोटो अवश्य भेजें[illegible]

योगिता बाली
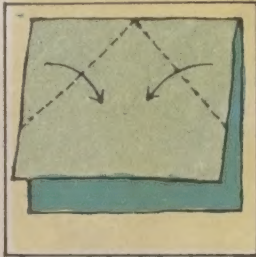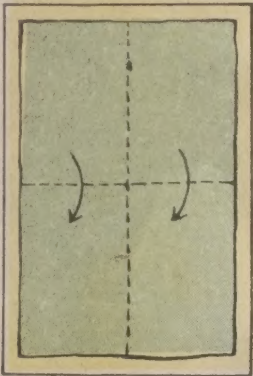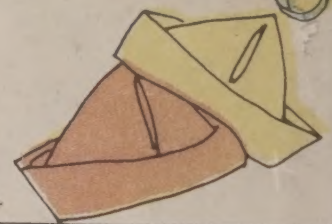
पॉपिन्स के कागज़ी कारनामे
ये हैं बच्चो राम और श्याम
तुम्हारे सांथी प्यारे, तुम्हें सिखाने
लाये ये कागज़ के कारनामे न्यारे
तिकानी टोपी
एक इतना बड़ा कागज़ लो जिसकी लम्बाई उसकी चौड़ाई से डेढ़ गुना हो. जैसे ५१×३४ से.मी. (वैसे किसी अखबार का एक पूरा पन्ना ले सकते हो).
पहले कागज़ को ऊपर से नीचे की ओर वाली दानेदार रेखा पर से मोड़ लो. फिर उसे सीधा कर लो. फिर कागज को सभी दानेदार सीधी रेखाओं पर से दिखाये गये तीरों की दिशा में मोड़ो.
इसके बाद दोनों कोनों को बीच की ओर मोड़ो.
अब नीचे के दोनों फ्लॅपों को ऊपर की ओर मोड़ो. एक को अगली तरफ और दूसरे को पिछली तरफ. बस टोपी तैयार है. पहनो और मुस्कुराओ!
PARLE
POPPINS
पारले
पॉपिन्स
फलों के स्वादवाली गोलियां
रसीली... प्यारी... मज़ेदार
५ फलों के स्वाद—
रासबेरी, अननास,
नींबू, नारंगी व मोसंबी.
everest/78/PP/248-hn